

‘मैथिली-मन्दिर’क प्रथम पुरतक

श्रीराधाकृष्ण गोपनि

अथ

मैथिली में बिहारी

अर्थ

प्रसिद्ध ‘बिहारी-जनसंस्कृत-सहित सर्वाङ्ग सुन्दर
मैथिली-पद्यानुवाद

अनुवादक—

धरमशर्मा—सहायानगराज ‘कदुशा’-ग्राम-विवाहा

काकु श्री कृष्णकृष्ण शर्मा द्वारा

‘मैथिली-वाचस्पति’

शुद्धतम समपादक-‘किंसाक-केसरी’ (हिन्दी) तथा ‘मैथिली-मन्दिर’ (मैथिली)

पौष-शुद्ध अश्विनी संवत्,

सन् १३४३ साल ।

[शुल्काक सर्वाधिकार अनुवादाक अधीन आछि]

—:०:—

प्रकाशक—

श्रीधनुषधारी काम, 'सैधिली-मानसलिन'

अथवा—

सैधिली-सन्निह

नया दार्जाल-रीड शालाभाक,

भारतपुर चिली ।

—१९००—

प्रथमावृत्ति १००० प्रति, मूल्य एक प्रति १ रु ५ मास

मुद्रक—

श्रीमिथिला प्रेस,

भारतपुर ।



सप्तमः सर्गः

निजिध-विहरावली-विमर्षित

महाराजाधिराज, मिथिलाधीश

श्रीधर्मराज कर्मभूषण रत्नसिन्धु श्री कृष्ण

के. सो. आ. १०, १०, १०, १०

कर्म-सुखल-कारक कर्मनीय कोमल करमे

मीथली-सहित-मन-मित्र आनन्दिक अविचल अमिताभभाषी

मेधिलो-मन्दिरे-भागलपुरी प्रथम पुस्तक

श्रीधर्मराज के किहुरी

अल-सहित, स-प्रम, स-प्रम, स-प्रम, स-प्रम

सप्तमः सर्गः

श्रीमान् !

मेधिलो-मन्दिरे-भागलपुरी मन्दिरे

मेधिलो-मन्दिरे-भागलपुरी मन्दिरे

मेधिलो-मन्दिरे-भागलपुरी मन्दिरे

मेधिलो-मन्दिरे-भागलपुरी मन्दिरे

मेधिलो-मन्दिरे,

भागलपुरी मन्दिरे,

सो. ७ जनवरी १९३६ ई. १

श्रीधर्मराज वाराणसी—

श्रीधर्मराज

“मै थिखली में बिहारी”

क

परिचय

—एक गद्य-कृति—



करीबोडवि सुमनः सङ्गा—

रासेहनि सनाधिगः ।

अस्मापि पाति वैषम्यं

महर्षिः सुप्रतिष्ठितः ॥



—सङ्गाधारी

हिन्दी-साहित्य-संसार में विश्वरीलाल जी अपन “सत्तसई” क कारणे अक्षय कीर्ति लाभ कयने छथि । ई ग्रन्थ अपन सन अपनहि अछि । ई मात सौ भुज्जार-रसात्मक दोहा कविप्रतिभा के रपट करैत हिन्दी-भाषा जर्मानिहार रसिकवृन्द के समर्पित करैत आयल अछि और यावत् भूमंडल में रसिकता रहैतैक तावत् करैत रहत ।

ओहि दोहावली क अनुवाद बाबू धनुषधारी दाम मैथिली-पथ में कयलैन्ह अछि और “मैथिली-मन्दिर” ओकर नामकरण “मैथिली में बिहारी” कय ग्रन्थ-रूप में ओकरा प्रकाशित

कव रहल अछि । पाठ-क्रम लहेरियासराय हिन्दू-पुरतक-भंडार-द्वारा प्रकाशित सुशेष काठय-माला क प्रथम प्रंथ "विहारी-तत्त्वमई" क अनुसारे राखल गेल अछि और अनुवादमें रचगी व "रत्नाकर" जी क तथा और्युन "वेर्नापुरी" जी क टीका क आशय लेल गेल अछि हमरा पूर्ण आशा अछि जे बिल पाठक वृद्ध एहि विषय पर दृष्टि राखि, जे ई अनुवाद श्रीक-टीका अथवा व्याख्या नहि-अनुवादक महोदय क प्रचलन केँ पथाधृतः प्रशंसनीय हुकताह । कारण जे ओ एक एहन कविक रचना केँ मेधिलीक आवरण एहिराँलिह अछि, जिनका से निम्न लिखित इलोक नीक जोकाँ बढैत अछि । यथा—

"अत्रानि हे सुकृतिषो रसविद्या कविश्चराम् ।
तामिह शेषां पद्यां पादे अरामरणप्रभवम् ॥"

ओनगर (पूर्वनिर्णय) } इति पूर्वनिर्णयः । सिद्धि
नीच पृ० ५, पं० १३३३ ताल । }

पुरतकविहारी

श्री

स्थान

पृ०

जि०

कव-स्थान

रत्नाकर—

पृ० ५, पं० १३३३ ताल

प्रेमोपहार

संस्करण—

श्री

स्थान

पौ० औ०

जि०

स्थान

.....

वर्ष

.....

प्रा १६३ ई०

}



श्रुतारथ—बापू चौधुर्यजी द्वारा, 'विधवा-वाचस्पति'।

दृ शब्द

मिथुन में मिथुन-मिथुन !

श्रीगुरु श्रुतारथजी वास "मैथिली-वाचस्पति" क नाम राँ मैथिली-साहित्यक प्रेमी सज्जन लोकनि अपसि-लिन नहि छथि। हिनक बनौल "मैथिली में विहारी"—'विहारी सनसई'क मूल-सहित सुन्दर मैथिली-पद्यानुवाद—देखवाक सुअवसर प्राप्त भेल अछि। 'विहारी-सनसई' हिन्दी-भाषाक साहित्यमें एक अविघनीय वस्तु बुझल जाइत अछि। र्थीर के स्थान संस्कृत-भाषाक साहित्यमें 'गीतगोविन्द'केँ छैक, सैह स्थान हिन्दी-भाषाक साहित्यमें 'विहारी-सनसई'केँ अछि। एहन अमूल्य रत्नक मिथिला-भाषामें पद्यानुवाद रहब मिथिला-भाषाक साहित्यक हेतुमें परमावश्यक

[३]

प्रतीत होइल । सुतराँ एहि अभावकें उपरोक्त "मैथिली में विश्वारी" सुन्दर सीति सँ पूर्ति करन; नदर्थ 'दास'जी यथावत; अन्यवादाई—भिकाह । मूल 'विश्वारी-मनसई'क पद-लालित्यकें दृग्गृह राखबामें 'दास'जी जे पढ़ना देखी-लैन्हि अछि से पाठकद्वन्द्वकें भवत ज्ञान होयमैन्हि । कह-लाक नालपर्य जे एहि प्रकारक ग्रन्थाहि सँ मैथिली-साहित्यक भण्डारक यथावत पूर्ति होयबाक आशा सर्वथा कयल जाइत अछि । और सम्प्रति मैथिली-साहित्यक भण्डारक सकलनापूर्वकें दृढि करबाक विद्युच्चमण्डलीमें जे जागृति तथा उत्साह दृष्टिगोचर होइल से ओकर शोचक भीक ।

एहि ठाम यहू भानक उल्लेख कयदैय आवश्यक बुझना जाइल जे मैथिलीक उन्नतिक पथपर नाना प्रकारक विघ्न और बाधा किछु दिन पूर्वा दृष्टिगोचर होइत छल, परन्तु हर्षक विषय भीक जे मैथिलीक सेवा कयनिहार व्यक्ति लोकनीक दृष्टीमे बहुत जीवना सँ आगुमर भय रहल अछि । सुतराँ एकरा किञ्चनमें किछु दीन पूर्ण जे विघ्न और बाधा विशाल-काय जल होइत छल, से यमशाः शीघ्र भय रहल अछि । "श्रेयासि बहुत विघ्नानि" इहो आवश्यक भीक ।

[३]

परन्तु तँ अपन कर्मज-पथ सँ विचलित होयत उचित नहि । प्रत्युत ओहना श्रित्तियें हमरा लोकनिकें उचित भीक जे दिव्यगुण गनि सँ मैथिलीक सेवामें लागि जाइत जाइ ।

अन्तमें समस्त मैथिलीक प्रेमी आतृगण सँ प्रार्थना जे मैथिली-ग्रन्थ-प्रकाशनक जे हो उद्योग भय रहल अछि, ताहि सभमें यथासाध्य साहायता करथि । कारण जे एहन-एहन कार्य दृ-चारि-दश व्यक्ति नहि भीक । एकरा एक प्रकारक यश बुझबाक भीक । सुतराँ जाहि प्रकारें कोनो यज्ञ-विशेषमें विराट आयोजनक आवश्यकता होइत अछि, ओही तरहें मातृ-भाषाक उद्धार-रूप यज्ञमें सबकें लागि जायत उचित तथा आवश्यक भीक । इत्यलम् ।

पुर्नियां,

ता० - ५ - १ - ३६

श्रीविद्यानन्द ठाकुर

एम० ए०, बो० एल०]

अवधि-

नभू निवेदन

जदेव मैथिली-लेखिका ।

१९९९



काज्योचित सकल गुण-विभूषित 'विद्यारो-सप्तसई'क मद्राक्षरा पत्रम्
 केक-पिच्छलाक सप्तपथमें एहि सभाभर विशेष प्रकाश रहलस इस अनासक्तक
 दुर्गत हो । कारण जे पुरखा सम्पन्नयमें चिरकालखीं अनेकानेक अधिकारी विद्वान्
 कर्मकाजसँ हाथ धुपै-करै चला छोड़ल भाखल अछि तथा निरवधि के
 रहल अछि एवम् माँकयमें औरै होयबाक अधिक सम्भावना । 'विद्यारो-
 सप्तसई'क मधुनशा एतम् लोक-विधाक प्रभाव एहिखीं अधिक औरै
 होतै जे सकल जे एकरीसँ बीपुत्र 'सत्कार'वीक अवकाशुसार ५२
 टीका: किन्तु भाषा तँ छायाग १५ टीका एकर जे चुकल अछि एवम्
 दिनानुदिन पृक्त-ने-पृक्त नवीनलाकेँ नवीन औरै टीका सब मै रहल अछि ।
 नवीन पण्डित धर्मिकारण व्यास, लार्डिन्गलार्ड लवर्गिल चरितगत पद्म-
 सिद्ध नाम, लवर्गीस धर्मिक लवलायलाद मिश्र, लवर्गीस लाला भगवान
 शील, लवर्गीस माधु, आननाथ दास 'प्रताकर' मोठ पृ०, श्रीमुख पण्डित
 रामसुख यमा 'विनीतुरी' एवम् श्रीमुख 'श्रीमन्'वीक एमान दशमिषिक
 माहिदय-सहायवी लोकनि जाहि 'विद्यारो-सप्तसई'क सम्पादनमें समर्पण छल,
 निदाय पत्रम् विवेचना-पूर्ण टीका, भाष्य, निरूपण, प्रबन्ध, आलोचना, प्रबन्ध-
 नोचना आचार्य विविध अवकाकेँ कृत-कृत उपैव, समस्त साहित्य-संसारकेँ
 गीतार्जन, आनन्दित एवम् आनन्दित करैत गेलाह अछि, ताहि 'सप्तसई'क
 सम्पादनमें पुनि तथासुध किहु विशेष व्याख्या, काव्य प्रकाश अपना श्रुत
 श्रुतिक अनुसार ईकाक गान-प्रकम्पन-कारक शब्दक समुच्चय सृज बनेबाक
 प्रभाव अनासक्तक एवम् काव्यारम्भ होलत । संक्षारक क्षेपण सतीव नापा
 रहल नहि अछि जाहिमें 'विद्यारो-सप्तसई'क चर्चा नहि भेल हो ।
 भविष्यत रमला, दूर, सुखलनी, आचारारम्भ पत्रम् अनेकी धर्म कोनी

स्थान-परिवर्तन

—०—०—०—

अपने लाकनिके प्रायः ज्ञान होयन ज पूर्व
‘मधिले-मन्दिर’क कोश्यालय कृष्णान्न, सुलभा-
नगजसे छल । किन्तु प्रचार एवम् प्रलम्ब सुविधाक
करणे ‘मन्दिर’क कार्यालय आव उठि कै भाग-
लपुर चल आयल अछि । अनएव आव निम्न
‘लक्ष्मिन पनामों पञ्चवचहार इत्यादि करव उचित ।

पना—

श्रीधनुषधारी दास,

अध्यक्ष

‘मैथिली-मैथिली’

नयाबाजार-रोड, सुजाताञ्ज

‘मैथिली’

[पना ३ १ ३३]

अध्यक्ष

‘मैथिली’ अध्यक्ष

अध्यक्ष

‘मैथिली’ में विहारि

—०—०—०—

मंगल-कासना

जयति जननि राधे । विश्व-आदर्श नारी ।
सफल एवम् हो ई कामना अभय । ‘मैथिली’
अधिक पद-भरसे लेखनी कैल करी ।
‘मैथिली’ जगत् केवै ‘मैथिली’ में विश्वसि ।

‘मैथिली’

[१]

‘मैथिली’ भव-भार्या हो राधा नारी ।
‘मैथिली’ जगत् केवै ‘मैथिली’ में विश्वसि ॥
‘मैथिली’ जगत् केवै ‘मैथिली’ में विश्वसि ॥
‘मैथिली’ जगत् केवै ‘मैथिली’ में विश्वसि ॥

[१]

‘मैथिली’ भव-भार्या हो राधा नारी ।
‘मैथिली’ जगत् केवै ‘मैथिली’ में विश्वसि ॥
‘मैथिली’ जगत् केवै ‘मैथिली’ में विश्वसि ॥
‘मैथिली’ जगत् केवै ‘मैथिली’ में विश्वसि ॥

[३]

ये जति मरति स्वामको, जति अमृतमर्ति जेव
रपाल हांका अन्तर सब गतिविकल भव होय ॥

हरेक मोक्षितो भूतियक गति धरि, अति आश्रयक देखल जाय
हरे स्वकल हृदयक भिन्न नैरा 'अनुप' विद्वजभरि अलक लोभाय ॥

[४]

हरे नैराय हरि साधका-गत धूनि कर अनुपाय
भाँद सब-कार-निष्ठम सा, पाप-होय प्रभाव ॥

सोय करदरि होइ 'अनुप' कर साधक-नि-तव-धूनि-अनुपाय
जतिनक केर सब-साधक हो, एव एव कुशल माने प्रभाव ॥

[५]

सब-कुल-दाता एवम, सोयल मान, समीर
नर हो सब अर्जो वरे, पा अनुपाय कीर ॥

सबल कुल-दाता सुखदा, सब-साधक मान, समीर
अलनरु मन अंघने मे जायल, जेनहि धरि हरि-सा-नीर ॥

[६]

सखि 'सोयनि' गोपालक, वर गुणनको सब
सब सबको सबो पाय शान्तनको यथाय ॥

हे सखि 'नरिय' सबपाय होमे 'अनुप' लाल कर-अधिक सु मान
सब सब होय, पूर्व-पदयल साधकल-न्याय ॥

[७]

सब सबो सबो सबको सबसा सबसा सबसा
सब सब सब सब सब सब सब सब सब सब ॥

सब सब सब सब सब सब सब सब सब सब सब सब
सब सब सब सब सब सब सब सब सब सब सब सब ॥

[८]

सब सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो
सब सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो ॥

अनुप होइ सबसा सबसा, सब सब सब सब सब
के सबो सबसा सबसा, सब सब सब सब सब ॥

[९]

सब सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो
सब सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो ॥

अनुप सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो
सब सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो ॥

[१०]

सब सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो
सब सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो ॥

अनुप सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो
सब सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो ॥

[११]

सब सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो
सब सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो ॥

अनुप सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो
सब सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो ॥

[१२]

सब सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो
सब सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो ॥

अनुप सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो
सब सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो सबो ॥

[१३]

दिना पानि, विगुलाज निरि, कल सख मल वेसकि
कम विरोधी जल व खो लखावे लाज ॥

'अनुप' दिले कर, द्वापरा प निरे लखि अमरापों सब लवकवि
'अथा-द्विजसो' मन क'पल' से शुक्ति दरि अरि मनहि लजारी ॥

[१४]

जोय, कोय रुख जो, सोय प्रलय अकाल
निजारी राखे सबे तो, मारी नोपल ॥

पुनर विनु कूच धरु लक, बापक गल्ल करक विन काल
'अनुप' सबक धरि द्वापरा कीजनि, निरिधे गो, ग धी नोपल ॥

[१५]

जान राखे वेकान कल री रहे १ धर कालि ।
नोपल बापक विन हो गोपल जहान नोद ॥

लाज करु देरद लफला कों १ 'अनुप' जाइलें हम सब मोन
दरि-दुख नोदरा नहि जाही, द्रविष रसारी राखल निर ॥

[१६]

मकराकल नोपलके अनुदल सोदुल कान ।
बलप मरी द्विप गइ समर, दधेही लखल निरान ॥

माल कुन सुपडन सो'पल' ल क'पल' काग मलय अरि नोप
'अनुप' इदर गल्ल मरल सारल' म नू द्वाप लखल लखल धं क

[१७]

नोपल' नू धुपल' द्विप धरल लहि पुनय
अरिधे लफली ओपल, परल पाल क पाय ॥

नोपल सो'पल' दुपिन मी, लखल लखल मरि निर पुनर
'अनुप' पुराण-पद पकलारी नूध पल्लु डेवद धकुपाय

[१८]

विधि पल्लारी नोपल' रं वल्लन गल ।
दरि-दवावा दक मारी चर लछीम' अरि ॥

दुदक देह किरील खल लफडक, अ' छापाने अरि कनारीय
'अनुप' नारीय सौप-संग दरि-राधन, लछी मलय अलनदिस हीय ॥

[१९]

गोपल-मंग विध सबको रगत रीखल रल ।
दवापल, अरि लछीमल, लफली लखे लख पाय ॥

अनुप लछी-निधि-नोपलक संग लखल पायमि लछी सुपारी ।
दुन लछी-नूधक अरि गनि सबसो लख लख ल' के मय नारी ॥

[२०]

धर धरि क' लछी-नूध, अरि अल कलि गुमान ।
लछीमो पयल वी लुडल, सुनिपल राधा मय

नोपलदिक दरि शिपल लछी किरी कीरी रीखल पाय ।
'अनुप' लखल अ' दद-दुपल' राधा-मय सुमल अरि जान ॥

[२१]

नान ओई कील-पद, अलम लछीम गल ।
मारी नोल-मो-वीखल, अलम परल अलम ॥

दुपल' द्वाप-लनपल अ'पुने छवि पुनरापल धरि धरि धनदपल ।
अनुप' नोपलमो लछी-नूध नालक, पाय पडल वी रीख लछीम ॥

[२२]

नोप' न नोपल कुल-पल' कालि न किन विख रीन ।
अरि नानो ध कुल-मारी १ वी सुलली-पुल-अल ॥

कुल-पुल' नोपलमो कल लहि १ अमल के नहि दिशा देल ।
अनुप लान चपो सुपमि वी क कुल-मय १ नजरल लेल १

4

संस्कृत-शब्द-वर्णना-प्रणाली-व्याख्या ।

परितः कायकी वाङ्मयः १५३ चतुर्थः शीतिः ।

अथार उपर चरी धर्मिनिष्ठु हरि नानु-आदिपद बोधिं अनुर
धनुषी हृदि बौद्धक अर्पण दत्त । एतद् अनुभववशा देवा-नमः ॥

— 25 —

बुद्धी न सिद्धिआको भक्तक संस्थापक श्रीमान श्रीग १

[illegible]

महि नोनमनक भलक छुट्ट ओ, कलकल समर्थ प्रणि ओ
 'धुप' दूह 'मलि समधि' नदल जिकि ओर फानि सुगच्छक देन

2

तिल-तन्त्रम् । तदपि श्रीगणेशाय नमः । पुनः प्रोक्तं च ।

काठमाडौं, १० चैत्र २०७३

भयानक' मनीष मिथि रवि-नाशक' वर पुण्य काल नाम दुहुक सु मौन ।
वयम विप्र-संकाशित क'तो मो, खनि दुष्यहि मौ क'वरो भाग ।

— 10 —

समय, अत्यधिक कठिना, धीमा-नाम समी सिद्धांत

भारत-काङ्ग्रेस संस्थान का कर्तव्य है

वेनकवि ललितललि धनुषं धुविन जगाम सविभमम सुखी निनद्राम
 धाध कालिकाहिमे कालकलम, अर पद देहि, कदल नहि जाय

— 6 —

माधव उभारें हीं संक्षेप पात्रां संस्तुतां

[illegible]

अनुप' उक्त सन 'कलु' किछु कर छानि, भान सोठि सिद्धि मिलु मेळ आय
सोभो मालक अरौ अर ईश' भानुवन नयन वानल ५ ५

सिंहप्रसाद सिंह विचारना

—

सं. १३३३

विश्वो न श्रीगुन क्लान्धत न न न न न

[illegible]

10

अविकलं लक्षणं चार्थं च दृष्ट्वा नि
पद्यते

सुप्रसन्न, स्वर्ण, नववत्, विविधवर्ण, वस्त्रे सुसज्जिते श्रीगुरुभ्यो नमः

सर्वत्र-एषा चतुर्भुजा हि ह्युक्ता, एषा-चतुर्भुजा चैकस्मिन् च भागे
एषा एव त्रयान्-रसान्, त्रिभिर्भुजैः, सकृदा चैकस्मिन् च भागे चतुर्भुजा ।

10

इस दुःखद्विषाकी चर्चा कर्म-कर्म शरीरन-जोति

सु० वा० कक्ष सर्वोत्तम सर्व, बन्धन नाशिन-शुद्धि दाता ॥

बद्धार्थानि नानां जी सा "धनुष समर्थक भवि क्यंति
तस्य सर्वे सदाक मुष धुति द्वा नो-नो मरिजिन तेह रूपा नोति ॥

—

मन्त्रः नारायण-सूक्तः=सूक्तः नारायणः, अर्चनम्=अर्चनम्, अर्चः

पुनः स्मरितं च पुनः पठितं तत्रैव । पुनः स्मरितं च पुनः पठितं ॥

‘नमो नमो-रूपे’ देव ध्याति नमः अगुधं शुभं शासकं बलवान् ।
 लक्ष्म भद्रं, बल्लभं धनं कर्म देवकं अक्ष-क-धाम ।

— 10 —

[illegible]

इत्यादि लोके शीघ्रतः प्रविश्य, सर्वान् सर्वान् विनाशयामास ।

‘अनुप’ नक्षत्रम्। तत्-वमद्वयं अद्वि-
 र्द्धं। सप्तमं त्रयोद्वि र्द्धं जाय
 त्वं। सप्तमं अनुपं त्रयोद्वि र्द्धं
 जायतु। ‘अनुप’ द्विद्वि र्द्धं जायतु ॥

[३३]

सहज भावजन, संपाद-हरे, धर्म, ध्यान्य सङ्गम
गता न मम पथ अपथ लोक विषये छुट्टे पार ॥

‘अनुप’ अहंता, निजजन कर्त्त, सुवि, सुगन्ध के प्रलसाणात्
सूत्रज सुपर केश ईश मन, कृपय सुगय नहि कर विचार

[३४]

यं कर, व्यर्थिन वरे, व्यर्थी के न विचार ०
‘नलदी’ उरभयो व भुवा निलदी धरन पार ॥

‘अनुप’ भंड पार, धारण्य भीष्टे, रमन’ कर लिखार की भंड
जलिकासी मम भूय वलमल अछि केश लोह संभारव वि वेद ॥

[३५]

नल लोहे क लोह कहे, सल सोमय पारि
नयो मय वयं न पार वरी नयनियारि ॥

सुत सलमय सप्तदि गतासी कल, पारिधरपर शिर-पथन जल य
‘अनुप’ ककर मय नहि धारि, ई-संपा वरुणवहनि मुरुकाय ॥

[३६]

इरे सुदय अरुण, राधकने सलमर ॥
मन नौनल, पयरे केश, नौल लोहे पार ॥

नाम, सुकोपल सूतल नहने केश जगत्तमी ईल छोटाप
‘अनुप’ देह वेणु वनि जगद्दी मयके सुत्तर, प्रपाम गुहाय ॥

[३७]

इरे अलल छुट्टि पारल सुल, बहिनो जना वरास
पथ विकारी है जगदी राम कर्ण दोर ॥

सुत्तार ई अलक पुट्टि पडने, धारण्य अहने नलल अनुज
देह भोक्तरी वेने हर अनु-मंडा ‘अनुप’ शरिया तुल्य ॥

[३८]

अदि रनि मम नीरवनि, केशकी नय मलय
ध’ सुननेके सल, ईनी पयल पल ॥

‘अनुप’ जगद्दी सुगनयन पथके, केशी छुवे सपथन वय
अकर लखि मम गेयट लथे लव लमक हेतु कलया जय ॥

[३९]

नौके जलन ललल पर दोके निल नय
लजहि वरुणय नय मम धाक-अधरव्ये कल ॥

शिरपर उलल सांगदीका अछि अनुप सु-लोहित धर्मशय रीक
मनु रीश-अलल-मलय आधि रवि, शोभा वरुणध शरीर अयोक ॥

[४०]

सवे धरावे ई लोके वलन धराय लम
नरे सुल वेदी कले अलन, पील, ईल, रमण ॥

सुभा अमर रथन लव ‘अनुप’ भलाभल लम ललम
गुवनी गल सुलगीर शोरी ‘अनुप’ लाल, पीयर, शिल, ललम ॥

[४१]

कल नये धंष्टी निव व्यक्त वलगुन होत
निय-ललल वंष्टी नय अल नय पथन कल ॥

‘अनुप’ ‘अनुप’ देलकी सय कल, अकक सुनय गुण रथ
‘अनुप’ नारी लाल निन्यक देने जगतिन आभा अकर धाँछ ॥

[४२]

पल पल वंष्टी लाल छुवे लाल लल ॥
गल लाल अल आल कदि, मनु नारी लल लल ॥

‘अनुप’ लाल लल लल लल, लल लल लल लल
‘अनुप’ लाल लल लल लल, लल लल लल लल ॥

[४३]
 पलक पाय रगते रहे छां कमोछन छाल ।
 भौं बुद्धलको भर्त्तव है, बंशी भासिन भाल ॥
 दूधुर वैरहिमें रहैत अर्द्ध पदवि भमुरप छाळ में पूरा
 दिकुल अवाछदूक भेछावै, होये 'अनुप' नाहि-धिर तूण ॥

[४४]
 सोल साक देव' अछल । अछल रहै बिनाकि
 नहु कल। कुजने बली भलो राहु भव नाहि ॥
 पाला-भिरक लाल दिहुलमें है बुद्धि अछल वहि बिधि आल ;
 अनुप नाहि शोचि कलम चलन हो, जानु मालमें राहुक आल ॥

[४५]
 मिलि चम्पल देवी रहै, गोरे मुख न लछार
 क्यों क्यों मरालावी चपे लो क्यों अवारि जाव ।
 बालन-विननु गौर मुखमें मिलि रहल अनुप नहि एह छाल
 तौं तौं मर लाला मुखपर लह तौं तौं ओ प्रलक्ष पुनः ॥

[४६]
 भिर-मुख कलि देव' गरी बंशी एह विनोभ
 कल-खनैर माने छिरा मित्र पूरा छुन गौर ।
 'रख मुख हीन नहिने विननु छ'लि सब जन भर्त्तव आनखिरन भेछ
 अनुप पूर्ण शशि, पुर-शेन तौं चुपकै एवा कोमें छेछ

[४७]
 राई-रचना बोलो, अछल, चिन्नबलि भौंछ, कमान ।
 अवां अकराही भई ललित, सुरास, शान ॥
 गहं-रचना दिवना, लह लोपल, हय, सुयना, धनु, भुङ्गदी, लान
 'अनुप' पूरा भकरा' एचरक मर दंड-गनहिनी कर भर्त्तमान

[४८]
 नाला मोह, मन्त्र छ करे कलको छेह ।
 कहे लो कलकलि हिले, लो कलीली मोह ॥

[४९]
 नाक लिकोहि नअथ नयन गुण सुवती कौंछ सपथ विनीक
 लमा कदाहि मोह अनु दिवने गहै कौट सन 'अनुप' अवीक

[५०]
 लौनि-पल्ल भुङ्गो-अनुप भविक-पथर शनि कान ।
 दल लल लल लल लल लल लल लल लल लल ॥

[५१]
 लौनि-पल्ल भुङ्गो-अनुप है, पथिक-मनन लो मान छेहि, जानि
 'अनुप' सुवती-सुव सुनय भिरक-राग, सुदकि नाकली अर्त्त शर नाहि ।

[५२]
 रस गलार भवन किने कलम-भवन है
 अलम-भवन ह बिना, खल-भवन है ॥

[५३]
 रस भुङ्गो-अनुप-भवन लहैने, लोह वंछ कलमक अर्त्तमान ।
 'अनुप' कलमक लोह रहैने, लोह कौट छलनक लान

[५४]
 निज लिलखि अलि मने चतु अरोर कर ।
 कलम-भवन है लोह, नाग पथि-लिलख ॥

[५५]
 करम लिलखल लखि भल रूपे 'अनुप' सुवती लो कर ।
 कलम-भवन है लोह, नाग पथि-लिलख ॥

[५६]
 अलं रस भवन कर, वंछ अलं मनु भेन
 लोह लोह लोह लोह लोह लोह लोह लोह ॥

[५७]
 लिलखल लोह लोह लोह लोह लोह लोह लोह लोह लोह
 'अनुप' न लोह लोह लोह लोह लोह लोह लोह लोह लोह ॥

[३३]

एव श्रेण कति दायी छत, नायक-वेर सिखाय ।
एव पुन श्रेत अमल गति पुनरी-पानुगतम् ॥

‘अनुप’ अनाय थाय सब भिदिहरी प्र प शुक्र नट-कला सिखाय ।
नारस. विविध देखवैल नृत्य गति. पुनरी देखाय सन धर्माय ॥

[३४]

मन्त्रमणि मन्त्राल ध्येय, देही ज्योतिष पार ।
कन अंगुलि-विष वीति दे, विरसति नक्षत्रमार ।

‘अनुप’ कपलनपनी नक्षत्रके, देखलि सुखदे अछि निज केर ।
कस. विष अंगुलि, साधिव हुन दे देखी हरेके छाया विरोध ॥

[३५]

वीति-परात वीरि अछति, पति पावत न बरात ।
अन-अन मे चित हुइतके, नट को अंगल-अन ॥

पुन-कोटी हुइत यमल कटपद, सापर सति दीई न छराय ।
नट सास ‘अनुप’ दूधक मल निगय. समनर अंगल अथ देखी जाय ॥

[३६]

पुन हुइतके हुन भवकि, कस न कोने बांर
हुइती कोन धरीछ देखी, फल गोछपर ओर ॥

हलके लइल डंग दूहुक ‘अनुप’ सुदि, एवल न छल अति मेहो कीर
जनु लइ दल दीयाप. भागमे रहने वीरहिमे एइ ओर ॥

[३७]

धीनेह सादल सहस, कोने एउत हजार ।
लोकल कोनर भेदुल, वीरि न पावल एव

‘अनुप’ सलस सादलो रहने, कोनहु पर दूहु यन्त्र हजार
नल रीनदय सैनधुके ई हंग, देखि न पायि लल अछि एव

[३८]

पुनर्गत वति न पञ्च लै, देखि सब सब गति
लासवटको ओरमे अंगल रही अछि चरति ॥

‘अनुप’ पहुँच लाइ, समार सूर सम सबे न अंकरा कयो उम सेक
लखा नटक गोछमे नमोय, ओरिछ ओरमे लज जगछ कोक ॥

[३९]

गयो सुई सको अंगल गयो वीति दे कीर
एक पञ्चक पवित्राज उत सभल, देखी देखी कीर

येरलि पवित्राक समुहमे, देखलि वीछ दे जेयो दीर
‘अनुप’ गलक पङ्क देयो पति विदि सलज हारय पुन पुनगी-बोड ॥

[४०]

भी ई उखे बाधक उअति, मोरि कोरि सुई मारि
नहि नहि भोगि गयो कोरि-सोझयो ओर ॥

ओहु सति बाधर उलटाके दार हुकाय भट सब मुख पुराय
नहुँ-भहुँसो नायिका नेरिछ सुट, ‘अनुप’ ओरिछि सौ अंगल मिटाय ॥

[४१]

एका-एके दसवन चेत, ओर ओइ अलस
भिर दसवनको सुगनमान, हानि अनाजिये जय

‘अनुप’ कपक हुगसी छत्राके देखी ‘अनुप’ दीर अलसाय ।
पुनि पुनि उमकनि पति नोखसै लुगनयनो मारि देख लगाय ॥

[४२]

सदशानि-को अतिशुभो मुख दूँ पङ्कट डीरि ।
पांच-अर भी भवकि के, नो अनेय भोधि

‘अनुप’ देनाह-सति दारिद्र्यदना, निज मुख पोषक फलसी ओरि
अधरा-सम अलकटा पुन थन अरिछि नेरिछि मिटकोय ई कतिव ॥

$$\left[\begin{array}{c} \text{O}_2 \\ \text{H}_2\text{O} \end{array} \right]$$
[illegible]

दातामित्रं बह्मदात्रे ॥ अत्रिः अत्रिः अत्रिः अत्रिः ॥
 अत्रिः अत्रिः अत्रिः अत्रिः ॥

1772

[illegible][illegible]

— 2 —

नामक-सूत्र त्रिंशत्-क-सिद्धन्त तर्हि स्यात् नार्थिक
पञ्चक-सूत्र सौ-सूत्रिक-क-सौ-सूत्रिक-सूत्रिक ॥

वा - लुक् चान्द विभक्त आदर्श
 आर्षः - चान्द एव चान्दोना गुण विभक्तानां चान्द विभक्त चान्द ॥

— 22 —

अनिवर्तनीयं प्रीत्यै ह्यर्थात् किंवा न तदर्थं समाप्त
 वह अनिवर्तनीय अर्थ कळू, अर्थात् अन्तर्हित समाप्त ॥

नमोऽगोचरं तेषां कुण्डलं सर्वार्थं 'अगम्यं' कर्तुं न हि एकं समानं
 एतत्तत्त्वमाह विद्वान् यो धर्मो-ब्रह्म तस्मिन् वासो होयिष्ये सुखम् ॥

— 2 —

समन्वयमास सप्तम दिवस पूर्णशतपद क्रि.श.
 १९१७ सुदीर्घमास—दिमास—क्रि.श. १९१७
 १

[illegible]

[२३]

व-कुत्रे भूरापे दुराति । हिं जग कानि गति-ला ।
 छे देक और उठो, जाहो और अरु ॥
 सु-कुति सुकोति नहि सुकाय एक-सुन्दरना । औरो चमकल ।
 धनुष' एक छुटलोपन आलो-पावरक, अनुपम और उमैल ॥

[२४]

कुनानि गरि अति थाकर ह, लोको दीस सुख-चाप ।
 किन न दरो पदिस रवो, नरो मनुकलो नाद ॥

मुख देखन दल्लासी' हथ गुग कुच निरि पालन बेल अकराय
 'धनुष' खाल दूग विद्रुफ आधिसे सडल म गडल दडल अँगियाय ॥

[२५]

ललित मयम -लीला जलम । कही विदुषा-खिल धूम

मय थाकयो मयुक्त पदो, मनो गुहम-वस ॥

'धनुष' कलिम कोथक दोपसी, बडल विद्रुफ लकि सिगुलिम अगम
 यथा मयुष मयु गीति पडल अलि, फल मुनाथक अपर ललोम ॥

[२६]

अरि दोरी मयु नहि, नेन-पडायो मरि

किलक-वो सिसै ला-ला सुओ कोली हरि ॥

कमल-लोचिसै 'धनुष' लपटा ह्रीलक फँसी लपदि लगाय
 वधन-पथिकक पकड़ि मारि पुनि स्वद्रुक आधमि डेल जामाय ॥

[२७]

ना लाल मोमन जो लहे, सो नहि कही ग अरि

दोरो-मयु गहरो मल-उधरो रहल नेन राति ॥

लोहा देखि हमा मा जे गीत-धरलक अलि से कडल म जेय
 नगुर चरुन मर सिगुके-आधिसे सदगि राति दिन उडैल खलाय ॥

[२८]

'कोन सुख कोहि न को-ध' कहि देन नहि
 रनो के जामन रनी देव छिनी नही
 नुल्ल सुखपर दूग म लो-नहि, मला छिनीन देख लंगव
 यदुर छिगुय मे लमी लगाय दव लंकक दूग अंगरी भाप ॥

[२९]

वय निवसो ईभिक कयो लवे छिनीन दोन
 लन-लुलो मुख धार ल अलो वनय -लम नोन ॥

'धनुष' छिनीन' लगल लनि, छलि पुलल छिनीन' धीरम पात ।
 अ-धनुषि लन लन धनुषी अरु हूँ के लहु अलि मात ॥

[३०]

मय कहे अरि-लाहु अलि, विगुयो और छुटि ग

रन बरन रन रनि अहो, लवीन महीनो गन ॥

का-मल निधि खूब पाडल अंड कभगुथिपाक अन्धी नोन
 वदुर ओहा गड न मडल ल ल-रंगम रं नर छुटि न

शैशवी से विद्यादा

[३१]

मय कोन ह सुनिव भन, मुख-एवम को और

'नर वरन चहुँ ओर न निरजल पालन कोन ॥

मय मय, मय मय मन सुवली-मुख सुख-दो-भार ।
 चान दिनिनी 'धनुष' मने अलि अलल मगन-लो सकर चकार ॥

संज्ञा संज्ञा

2

प्राप्त
२०८०
वर्ष
आ
प्राप्त
मिति

[illegible][illegible]

सुगतं सुख-साधनं प्रथमं नाम

[illegible][illegible]

2

नरक मः ॥ वर 'नरक' मा' मा' उरु' अन' एरु
 उरु-उरु-नरक' मा' अन' एरु

[illegible]

2013

$$\begin{aligned} \text{जहाँ } \frac{1}{\sqrt{2}} &= \frac{1}{\sqrt{2}} \cdot \frac{\sqrt{2}}{\sqrt{2}} = \frac{\sqrt{2}}{2} \\ \text{जहाँ } \frac{1}{\sqrt{2}} &= \frac{1}{\sqrt{2}} \cdot \frac{\sqrt{2}}{\sqrt{2}} = \frac{\sqrt{2}}{2} \end{aligned}$$
[illegible]



लयं अमल्यो सी त भक्ति, करी करी करि होन ।
 मय मनो सुखी कर्ण सुख निरामय भनि दीन ॥

[illegible]

三

मन्त्रादिना विष्णुः सर्वं जगत् सृजति ।
सर्वं जगत् विष्णुः संतुष्यति ।

सुगन्धितं चैव च यथा मदनं वैश्वि, मेतुं सुमुखमग्नौ नमः ।
 नमः नमः यमुने देवि देवि वरुणादेः देवि सुखं नैविकं नमः ॥

「三」

[illegible][illegible]

【 2017 年 10 月 20 日 】

पुनः महाभारतं दत्तवान्, तच्छ्रुत्वा वैदोऽपि आगच्छत् ।
 विदित्वा हि ज्ञानं महाभारतं, पुनो मौञ्जं गच्छ ॥

पेट-पाक अरुण देवाक, मोभारलिन बेलोक ला
 'अनुप' जालि पर्वदुल्लुका उगमने पुनि पुनि एउो माजे
 सपथ

— 45 —

कईदही एंकीयदी, कालो निरालि सुभाज
प्राथ महामर देनको. आबु भई वंगाल प

सर्वोत्तमः सुखोऽयम् । अथैवैति चेत्तदा तत्रैव ।
तत्रैव । अथैवैति चेत्तदा तत्रैव ।

三

विषय का अर्थ विविध-भाव प्राप्त, सामान्य भावक रूप प्राप्त, पूर्व-न-गुण-लक्षण-सूक्ष्म-भावेन, अर्थात् न-कारक-लक्षण-भाव

[illegible]

शैविज्यं मे विदधाम्

[१९३]

लोहस्य सैद्युता 'पादयोः अन्तर्गतं' अर्थात् अन्तर्गतम् ।
सांख्ये सर्वत्र-सुखे उ-त्तरः, 'एवमेव' सर्वत्र सुख-प्राप्तम् ॥

एवं शैविज्यकं तद्वत् सांख्येयिज्या, 'अनुप' एवम् अस्ति शोभा प्राप्य ।
उक्तं तद्वत्कं तु सिद्धी पुरातनं हि, रविं 'अस्य' तत्प्राप्ति-एव आय ॥

[१९३]

पञ्च-पञ्च सप्त अस्मत्प्राप्ति, एतन्-अस्मत्-सुखि-सुखि ।
शैव शैव अस्मिन्ना उक्तं, 'दुःखदिव्य' से सुखम् ॥

एवमेव एव-एव एव शैवि, ज्ञान-अनन्य-सुखि अस्ति तज्ज्ञानम् ।
'अनुप' वैश्व एव उ-प-प्राप्तं अनु-उ-प-प्राप्त-प्राप्तं सु-सुखं प्राप्ताय ॥

[१९४]

दुष्टं न सुख-प्रियं कुरुषी सुखी सारो ज्ञेयम्
काल-अकालं अस्मिन्ना प्राप्तं सुखदिव्यं शैवम् ॥

सदृश-सन्नि-साक्षात् शैवि-विश्व-सुख, अस्मिन्ना नहि दुःखम् एवम् ।
कवि-सम्प्रदाय-सम्प्रदाय 'अनुप' से, एवम् वैश्व एव, अस्मत्प्राप्तिं सुखम् ॥

[१९५]

अर्थं तु सम-सुखि एतन्-सुखि, प्राप्तिं एवमेव न शैवम् ।
अंश-अंश अस्मिन्ना सुखे अस्मिन्ना अंशं सुखे न ॥

एवमेव प्रियं मे सौख्यं शैव-सुखि, 'अनुप' शैव नहि एवम् सौख्यम् ।
अंश-अंश अस्मिन्ना सुखम् अस्मिन्ना अंशं सुखम् एवम् ॥

[१९६]

सुखं पश्यति न कदाचित् कालं ज्ञानं रविं शैवम्
संयम-संयमे सौख्यं शैवम्, 'अनुप' शैव नहि एवम् ॥

'अनुप' एवम् शैवम्, 'अनुप' शैवम्, 'अनुप' शैवम् ।
शैवम् शैवम्, 'अनुप' शैवम्, 'अनुप' शैवम् ॥

शैविज्यं मे विदधाम्

[१९७]

मानसं किञ्च वद-अच्छ-सुखि सुखम् शैविज्यं ज्ञानम्
ज्ञान-ज्ञान एवम् शैविज्यं किञ्च सुखं एवम् शैविज्यम् ॥

ज्ञानं ज्ञानं भक्त-सुखम् प्राप्ति-सुखम् शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यम् ।
ज्ञानं एवम् शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यम् ॥

[१९८]

शैविज्यं शैविज्यं ज्ञानम् शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यम् ।
ज्ञानं ज्ञानम् शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यम् ॥

ज्ञानं ज्ञानम् शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यम् ।
ज्ञानं ज्ञानम् शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यम् ॥

[१९९]

ज्ञानं ज्ञानम् शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यम् ।
ज्ञानं ज्ञानम् शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यम् ॥

ज्ञानं ज्ञानम् शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यम् ।
ज्ञानं ज्ञानम् शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यम् ॥

[२००]

ज्ञानं ज्ञानम् शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यम् ।
ज्ञानं ज्ञानम् शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यम् ॥

ज्ञानं ज्ञानम् शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यम् ।
ज्ञानं ज्ञानम् शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यम् ॥

[२०१]

ज्ञानं ज्ञानम् शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यम् ।
ज्ञानं ज्ञानम् शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यम् ॥

ज्ञानं ज्ञानम् शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यम् ।
ज्ञानं ज्ञानम् शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यं शैविज्यम् ॥

[१२३]

साधन है कष्टान्तर को वशों है विचारान नाथ
 सनमध-नेत्र नाथ-पत खसी खसी मल सर्हि ॥
 अप कहर नाथ सन कानन चुप गहल अछि, मनमें अप
 नष्ट-नेत्र-सम पावरा है अछि 'अनुप' न कोनरु विविध बहुराय

[१२३]

अछि सनमनाको रसो खान नकन एक अप
 नाक-परा वेन लखी गल गुहजनके पान ॥
 एकम न कानक सधाके सङ्गको सङ्गको रहि मोल
 मुकामिक मुगलनी नञ्जे 'अनुप' प्राप्त नाथक स' मोल

[१२४]

अन १ संग-विन्दु-परा मुख-सर्व विचार-आध-गुरु
 एक सारे सर्हि सन 'स मल किन कोचल जगत ॥
 लाल-विन्दु-मोना मुख-सर्व अप, पाँच-टाढ-नलक-गुरु
 'अनुप' गन 'अनुप' सगली, गुण-गो-के सनमधके देख

[१२५]

लोको विदुषी, अरु सख, सखा अपाम छवि बर ।
 लख सुकृति-रति दिनक से-सै-विन्दु-नेत्र ॥
 अनुप लाल नख गिर कानि-टा कानन अँना सोना देख
 यदि विविधो सेवनक दूग प्रीति-मुक्ति उप-समय पक्षेख

[१२६]

प्रेम-विन्दु-मोना, कानि-गुण, विष-विन्दु-मु छ भकल ।
 लाल-लाल अपमध गुण, वीका वी-काननान ॥
 सङ्गको सोन कानि-कानि-सो, लिख-हि-वा-समे देख
 सनम-लाल मणि कल दानक सन मम मे नमकानि अनुप लख

[१२७]

सखी सखी मोमदी और अनक एक न
 मो मन-पुन अरु मरु और अरुने केन ॥
 नाथ गुणके टाढर अँना-वि, लक्ष अनुक करिछ, सुक न
 दसरा मन-पुन के कर देख नी, 'अनुप' 'विचार' सैन ॥

[१२८]

नम गुण अन-पुन पान सग-परा-परा
 स' अप-परा स'परा कानि-परा को अप ॥
 सनमे सङ्गको टाढर अप-परा, मेर स-परा अप-परा सु-परा ।
 अछि लखनी सोना न बने ई 'अनुप' नाथ ले स-परा-अप

[१२९]

परा लखि अप-परा-परा, 'विचार' अप-परा लख मोन ;
 अप-परा सखि है वही सु-परा अप-परा मोन
 पाप लखि-परा-परा-परा-परा, 'अनुप' लखल गुण अप-परा
 लखि-परा-परा-परा-परा, अप-परा सखि अप-परा लख मोन ।

[१३०]

अप सानि-परा-परा अप-परा लख मोन ;
 अप-परा लखि अप-परा अप-परा लख मोन ॥
 अनुप पवित्र विचार मणि देकल सग-परा लखि अप-परा
 नाथक लख मोन अप-परा लख मोन अप-परा लख मोन

[१३१]

अप-परा लख मोन अप-परा लख मोन ;
 अप-परा लख मोन अप-परा लख मोन ॥
 अनुप-परा लख मोन अप-परा लख मोन ;
 अप-परा लख मोन अप-परा लख मोन ॥

[१०२]

कला मलिन आसी ज्ञानहि दूरत ये सख्त निराम
अनारा अंगन छाये छोटे आरसी बजास ॥

मलिन करैछ सुखी सोभुके हरे स्वामी के 'अनुप' ज्ञाना
अंगराम तन नाराछ सुकौं देनापर अनु साफल प्रदत्त ।

[१०३]

अन अना मलिनाना परि पानन-सि सख पाव
गुहरे मलिन, पानन भुवन वाने नान ॥

देना सस शरीरमें पडने अंग अंग-प्रतिनिधन अनु
निगुण निगुण भक्तिन में 'अनुप' सांभितिक भुवन रूप

[१०४]

अन-अन श्रमकी लाल अवसि कानि अरुह
अने पाननिक, तन-अन मनी-खे रह ।

बहुते जाइछ अन-अनपने 'अनुप' लाल सोपाक अर्थक
अनि पाननखे सेने नैथे देह माल-सन लगे साक

[१०५]

देव न लीकाल पावसि, कउन-से सब दास ।
कुंमलाने साकाने, अने श्रमकी माल

स्वामी स्वामी पानन-निगुण 'अन-अन-माल' एकत्रु म लाल
'अनुप' देविन पकृतल अछि कानि जगने ओ जाइछ कुरंगलाल

[१०६]

अन अन मनेमने १ तथे यह तन छुपाने ०
एव पानन पान मने, सांभालिके भव ॥

दे सुकुमार शरीर भुवनक कछु साकाने काननरि सेक
'अनुप' जखन सनेन-मनेमने मनेपर पडे न पद मे सोक

[१०७]

न कक धरत हरि हिल धरम सानुन कलाल-पार
अन नान भवमनेन के धन धनन धनमाल ॥

अपनासनि सुकुमारि हृदयपर हसिक धरन केछु न देस्य ।
'अनुप' कनक अन्धन सममाला कपूर मारसो सा-अन पद्याय ॥

[१०८]

अन-अन नान अन्धन अंगनिक नान उकुमार
सुधन धरन धर-अन पान, वेवि 'अनुप'अनक मार ॥

अन-अन धरन अन्धन धरक बहिर अंगुष्ठ सख अनि कोमल छह
'अनुप' यथा विछिद क माली, हवि रंग लाल अन्धन मनेमने ॥

[१०९]

अन पाननिक अन्धन लके न देह सुख
अनकानि हिय गुनारके मनेन मनेमने पान ॥

अनक पडक डेर न देह पाने निग-पद कानन सुख सकैछ
'अनुप' गुनार-अनक-अनक-मनेमने एव धरन हियमे निकककल ॥

[११०]

नै धरनी के नान न देह कानि कानि ०
अनक अन्धन गुनारके पानि मनेमने पान ॥

अन न देवि मनेमने अन्धन, अन्धन निदेन कानि ०
'अनुप' गुनारक नानमे कानि, 'अनुप' अन्धन लालकल कोमल ॥

[१११]

अन देवो सोपाने अन्धन अन्धन पुरदवी कानि ।
अन-अन्धन अन्धन मनेमने अन्धन अन्धन ॥

अन्धन अन्धन कानन पाने अन्धन अन्धन देवक देव मार ।
अन्धन अन्धन मनेमने अन्धन अन्धन, 'अनुप' सकल लालार

[१६०]

राज्य-राज्ये व्यापक रहत, कर्म-कर्मो विपत्त अभाष ।

सगुन सगुने सगुनी, सु न कल-कल युगाय ॥

जो जो पावे छवि अभाषके, जो-जो प्रियासके रहि जाय ।

सुख-सावय-पूरी कपक है, नैव-पूया गहि अमुप मित्राय ॥

[१६१]

राज-राज-आषड-अपरी, आनन विपत्त की म

कानि आक, विद्या-अनन, रहो धारो नैव ॥

सुधा-सदृश सौन्दर्य सुख-पुष्टि, अमुप सुख नहि विचरि कनेके ।

प्राण-कायल दोषाद्वय अलि, दुरा नैव सुखापर अहल रहैछ ॥

[१६२]

सुख सौंवि माते सु-सुख गतति न पाह-विपत्त

धर स्या-गुनको गत अहं अहं अहं अहं ॥

सौंजित कल दुख, प्रिय साते, को न पुनि-विपत्त अमुप

अमुप कल-गुण-गद मस्त मे अलि प्रसन्न विचरि सच काम ॥

[१६३]

अनन शक्ति आनी सौंजित, गहि-गहि गद गद

अने न केले जगत्तक, अमुप जगत्तक ॥

जकर निजस वनवे वेदल, के-के : अ-मस्त गद अ-मस्त ग

अमुप विम-कालो सौंकारक मेला सचहि 'अमुप' कल ग

[१६४]

{ १६० } तो सब अर्थवि शब्द, कल अर्थो सब जगत्तक ।

सो दल जगत्त कल, जगत्त अलि अलि अलि ॥

सुख सग अमुपमस्तक शक्ति हद, अग अग अग अग अग

[१६५]

अनन न वि विपत्त अह-अह अह अह अह अह

अली, अलीको ओर है चली नली विवि अलि ॥

सखि ! तुवला नामी देवापकी, अमुप सखाय अ-मि नर किए

नायक-वर्षा लखलख सखि देहक सखिक ओर है गहि अ-मि ॥

[१६६]

अनन अह-अह अह अह अह अह अह अह

अह अह अह अह अह अह अह अह अह अह अह अह

नायक-वर्षा लखलख सखि देहक सखिक ओर है गहि अ-मि ॥

[१६७]

अनन अह-अह अह अह अह अह अह अह

अह अह अह अह अह अह अह अह अह अह अह अह

नायक-वर्षा लखलख सखि देहक सखिक ओर है गहि अ-मि ॥

[१६८]

अनन अह-अह अह अह अह अह अह अह

अह अह अह अह अह अह अह अह अह अह अह अह

नायक-वर्षा लखलख सखि देहक सखिक ओर है गहि अ-मि ॥

[१६९]

अनन अह-अह अह अह अह अह अह अह

अह अह अह अह अह अह अह अह अह अह अह अह

नायक-वर्षा लखलख सखि देहक सखिक ओर है गहि अ-मि ॥

在因斯布魯克

१८८२]
 मङ्गल कवि दीर शं. मङ्गल चित्तले
 शब्दों वाचन लोच मन्त्र, शब्दों गार्ह
 सुखभाष

[illegible]

१८४ } नहिं काय ।
 विच्छेद, नहिं सन्निधि
 वा नष्टनीति । नहिं सन्निधि
 नहिं नहिं नहिं नहिं नहिं

[illegible]

एवादि सक, कवि नामधर, यथाहि सिंह तथी राक्ष
 एवादि लोको को करहि लवि, जगाम-अंग नको कपाल ॥

[illegible]

हे वा
 का हा
 अन्वयो
 नात्वा
 लोचनानि, अरुण
 मुनि को, श्रीनि
 चारुचौरी
 वीरिन
 लोचनानि, अरुण
 मुनि को, श्रीनि
 चारुचौरी
 वीरिन

[illegible][illegible][illegible]

मोक्षार्थं नमि नोम शृणु कथये कथयिष्ये वरिद्वैतः ।
 विनोक्तं शृणुय शिवा-गुरु-वचनं । इति शृणुमि श्रुतः ॥

अथैव धर्मा ममता ह्यमरुजो जगत्त्रय ओषोष्य एव नैन
अधिक छाकं छवि गुण भेदं सुन्दर युक्तक ललस्य चित्त येन ।

कं नमो ह्येनं कृतः । तत्र श्रवणी जिति आदि
तत्र पदार्थ निमित्त एव चित्ते न भग्न कर लजि ॥

के जनीन अहिम्ना "अनुप हुत कां ? आगं अहि उपजल अहि वाति ।
इसमें अहिनाई मानने काग, लाल अहि वयासी हृदि आति ॥

इसमें भोजन, कुछ पानी, संभवित शक्ति का भ्रम
भी का भ्रम का शक्ति, नई काम के काम ।

सुखं तर्हि 'मित्रं अनुपादय नहि, एकहिं हेल हह झन्डो' धाम ।
 उपय धादि अजल'धु' रहसल, 'अनुप' विमुण ओ निर्दय काम ॥

अथ
कौं व-सी एतन्मा, तर्हि मुगली-मुनि, शान ।
किंये दहतीत दीत राख विन, कानन लाये कानन न ।

सुखो-विमर्दि मर्दि. आन लक्ष्म मन्, सुखक मन्त्र-मन्त्रोक्तक वन् ।
 सु-वि-विमर्दि मर्दि. आन लक्ष्म मन्, सुखक मन्त्र-मन्त्रोक्तक वन् ।

तकुंदो मदकति, पोण-पद-सदक छदकसी जाल
 छल काला निजसनि चोई चित, लिखो विरागीअल ॥

श्री. नरेशका गोदानपत्रासकत. इत्यादि नरेशका अर्जुन. इत्यादि
पञ्चक मलकक दामनवर्षी इति. इत्यादि का. इत्यादि इत्यादि इत्यादि

१६०

धृग उलभत, इतर छलभ, नुल्ल चतुर-चित्त प्रीति ।
 परात गोट इत्यव-हिते, धरे । नरे चरु रागि १
 'धनुष' छलभ ह्य छुट छुटभ्य सल, चतुरक सिलमे छुटछल प्रांग १
 गोट परे चतुरक छलभमे, प्रसू 'अपुर्ण' ई केदन राति १

[१६३]

कलीत तैर पा-चर सल, धरे न चर छलभ ।
 सलभि धरे पातको चले, कलित धरे धर काव १
 चर-चर निन्दर होछल ने धा वधिया धरि चरमे न दहैछ
 धनुष जनि ओकरे चर जाछल अलजामे पथ वेद अहैछ ॥

[१६४]

चर न दरे, नै-धन धरे, धरे न कल विपल ।
 निन्दक छानि अहरे न 'कर्त', चरि विपम अविपलक
 चरसँ छट नहि, निन्द न जावे । धावतनु सभस न होछल कास
 कर्मधो पानि धनुष न अहरे, छवि मर परम विपम भिन्न नाल

[१६५]

सुदधि चर-धरे, अलभति अला, कछु न धाकति धरे ।
 धाँ दहति नलको बला, अहरे पाप-मेह ॥
 अहकि चहरे चले नै-छाये 'धनुष' रज नहि अहरे गाल
 चतुर नालकक धन धल न नटव देस राम हाछल आन ॥

[१६६]

नयन दने हरि-धरि, कनी सोद चुनी काव
 हो' धन धरे धीव धी, लोभन धरी धकाव १
 छलभक रूप-ले 'धरि' प'डि ह्य सदा पद' मिश्रित कौलक जाव
 धावतिमे समर' देखल, ह्य भिन्न धरि 'धनुष' दलध

[१६७]

नरे छानि, छलको सल, विफल धरे छलभ
 छल, धरे धरे 'धरि', धरि-धरि, धरि-धरि ॥
 धनुष लाल भव, छल-कल 'चल' प'डि धरि 'चल' धरि धरि धरि धरि
 धनुष धरि धरि 'धरि' 'धरि' धरि 'धरि' 'धरि' धरि धरि धरि धरि ॥

[१६८]

चलत धर, दलत धरि, धरि-धरि, धरि-धरि
 धर न धर, धरि-धरि धरि-धरि धरि-धरि धरि-धरि ॥
 धरि-धरि धरि-धरि धरि-धरि धरि-धरि धरि-धरि धरि-धरि ॥
 धरि-धरि धरि-धरि धरि-धरि धरि-धरि धरि-धरि धरि-धरि ॥

[१६९]

नलो सक, सल-धरि न धर, धरि-धरि धरि-धरि
 धरि-धरि धरि-धरि धरि-धरि धरि-धरि धरि-धरि ॥
 धरि-धरि धरि-धरि धरि-धरि धरि-धरि धरि-धरि धरि-धरि ॥
 धरि-धरि धरि-धरि धरि-धरि धरि-धरि धरि-धरि धरि-धरि ॥

[१७०]

धरि-धरि धरि-धरि धरि-धरि धरि-धरि
 धरि-धरि धरि-धरि धरि-धरि धरि-धरि धरि-धरि ॥
 धरि-धरि धरि-धरि धरि-धरि धरि-धरि धरि-धरि धरि-धरि ॥
 धरि-धरि धरि-धरि धरि-धरि धरि-धरि धरि-धरि धरि-धरि ॥

張敬之

三

गङ्गा की लहरें हैं, लहरें लहरें हैं, लहरें लहरें हैं, लहरें लहरें हैं ॥

रसमिमांसा आदर्शमिमांसादि हंमन्त्र मुमुक्षुना वाच कश्चिनां पाद
अमुप' कनकु को वागल शशि पूव' का ककर' पूव' एवाक भादि

10

[illegible]

अथ हि वरुणवदि नदीनि अष्टि. तत्रैकं वषण मोदसिद्धार

3

राशि नक्षत्रं च
नक्षत्र-दिना

संस्कृत-भाषायां शब्दार्थः
शब्दादिनाम्ना यथा कश्चिद्वाक्ये
उपयुक्तो भवेत्तर्हि तस्मात्

卷之六

समस्त, समस्त-संसार-सम विषय वा हिंस्र शब्द ।
हिंस्र-हिंस्र शब्दार्थि हिंस्र शब्द, हिंस्र शब्द शब्द ।

महाराष्ट्र-प्रदेश का इतिहास

20

तथा नवकाये निवृत्ताभ्यां, शुद्ध पुस्तकभक्तौ भवति ।
 तं हि शरीरं ते विभं किं नृणे शुद्धं कथम् ।

अथ श्रीभारतवर्षस्य विष्णुधर्मसूत्रे दत्तं गुरुकृतं शास्त्रम् ।
 अथ श्रीभारतवर्षस्य विष्णुधर्मसूत्रे दत्तं गुरुकृतं शास्त्रम् ।
 अथ श्रीभारतवर्षस्य विष्णुधर्मसूत्रे दत्तं गुरुकृतं शास्त्रम् ।

卷之四

सखा विप्रपति आनर्पिथ, सैनन कर्जोसि वाप
 एतं कुरु गो तथ भक्त, एता पिप्रगीक

अथुयं मन्त्रं निरावृत्तं न क-विधिं करे निर्विघ्नं संनक्ष्णं शुकः ।
 तद्धुं तद्धुं कहुं श्रीं निगम्य तुभ्यं, यस्यां ह्यप्य विप्ररीकृतः ॥

— 3 —

उर लीम अति मरुपयो, धनि गुरली-धर्म मरु ।
 हा दुसली निमली हरी, गर्व हल-ली कभ ॥

अपणल ए'कुलमा शानि एम सुखि शानि तुनि भाल उमल ।
अपुन रौखिकं ओं एम नोखुं मासा भौक देल बलि अप ।

20

आ दल में रहिए। कई अनां हल अंक, जाँ फोतीलीं बाँटि आप, मैं बाँलोंको डंकि ।

तेनाः देखां नाना भेदात्, "अथवा" एवम् पूर्विकं सुधा-समाप्त
 अथ विव (सोखुं) द्वा पण्डित तर्हि लोक-समाप्त मम प्राण ॥

۱۰

[illegible]

मैंने एक दोस्त को 'अनु' कहकर बुलाया।
उसने मुझे बताया कि वह 'अनु' नाम का है।

[२१०]

अपरी गङ्गाभि योत्तिष्ठत, क्वं तद्विरे ते ह ।
 वृ धारो मे शीवको, मं भव धारो मां ह ॥

अनुपुं वसंते ह्य निजगारजो, सादृशपर मम को उपकार ?
 तं ह्यमरा प्रापक विप छह को, अपन प्राप श्रेष्ठ भेदि अपार ॥

[२११]

धरार्ज वीरो तव विरा, मनु प्राप मिलि साथ ।
 भुक्ता भक्ष तव नृ विरा ह्यथ न शीर ह्यथ ॥

त-मूल विराज मर्त शक्ति लङ्क, रमिज-सुखल तांथ, धनुषं लतु नाथ
 मुहां धर्मद्व कर्ता ह्यविपक विरा, मयने ततो न ह्यथ सो ह्यथ ॥

[२१२]

वैद्यो गोवि स विरसे, सोका लो कवाट ।
 मन्त्र मे आत्म जान भक्ति को लो केहि शत्रु ॥

अनुपं लार्गिके लखन लो रो, शोचिना निर्जितर कलल काराट ।
 कोन मे आरक्षण छवि के लो, लोच पड़ाय नाथ कोन धाट ॥

[२१३]

गुणं लोकी लखि छाकको श्रान्त अनन्ता मोह ।
 गौतमो लोको विरति, मुखाति लोको छोह ॥

शुद्ध लखन दृष्ट पांशमथ, धनुषं विराजमान अंगित मौह
 वैदिलि शुभे वनाहि लेको को-कुन्दरि, सुभक्त गुणित छोह ॥

[२१४]

लनाको हृद लनाहो वद, कोक को अनक
 क्षान्त काक-गाछक मयो सुहृ श्व शत्रु एक ॥

हृत्तक धर्मो भुमकहिरो वनहल धया कर निन्दा धनुषं धवक
 काक-मयन-विमल-लाम दूरी, प्राप सुदूर वेदमे एक ॥

[२१५]

कलत आन भवो कवी कवी धवि रस-सन्निता लोच ।
 भक्त-वाले-वर, प्रेम-वत्, लोचो लोच दूर ह्यथ

दम-धर्मिक धार धवि कदाहल, धनुष कटव लोच अशोक
 द्विप धाका पंम लल शान्त, हृद होहल, अचरव है धीक ॥

[२१६]

लल-मयई बल कवि धर्म, को न कलत-कुमार ॥
 शक्त-मयल वर भालमो, लोचो प्रेम-लल-लार

लल-मयई धाका लोच मयल कवि सक्त नहि भुक्त-कुमार ।
 प्रेम-मय-लोच लल लोच कर, हृद धाका लोच धनुष अपार ॥

[२१७]

मुदरा न वैधत विरक्त धर्म प्रेम-मयल अह लोच
 मारवी कवि-विशि मांथो, लोचो कलत सुभक्त ॥

छुनि धवि लकल 'धनुष' छविध धवि, लोचो प्रेम मयलक अलि लोह
 धुनि धुनि मयल ज्ञाप मयले, धुमी सुविद लयार लोह ॥

[२१८]

विरक्त वेह लोचो लोचि ज्ञान भयो भवभक्ति
 धृद अल-लोचो न कहुँ लोचो, लोचो मयल अलि अ लोच

लिन्युं विरक्त मयल विरक्त लोचो लोचो धनुष लोचो
 लोचो लोच लोच लोच लोच लोच लोच लोच लोच ॥

[२१९]

धर्मो धर्मो ? धर्मो धर्मो ? लोचो लोचो लोचो लोचो
 लोचो लोचो लोचो लोचो लोचो लोचो लोचो लोचो

लोचो लोचो ? लोचो लोचो लोचो लोचो लोचो लोचो लोचो लोचो
 लोचो लोचो लोचो लोचो लोचो लोचो लोचो लोचो ॥

[२२०]

अरु हाथो बिना चेरबलि, कउ चेर विनसाहि ।
 हाथो अविजग हो भौ, नौ करसिफा कारि ॥

पुसि छलेक सभ सदल निफटसि शिवेक नेहक लिबईह ।
 कनखीवो ककंद चलि देखक, 'अनुप' नयन नीखाई कोह

[२२१]

हौ हिय रहति छै को नई अगसि जग अथ
 अरिज-ल-धनिय छौ धरि देव दयही दाम ॥

'अनुप' गुक्ति जगमे ई नय ललि छैल ब्रज आशचर्यिख दीय ।
 लग अरिज-सौ अरिह किन्तु हौ अरिन दुखल शरंग कमनीय ॥

[२२२]

गम अडोछ, दुलै नही, दुख सोने अनखाय ।
 कल उनको मरान चली, निजनन कोहि ब्रजाय

मेघ धीर अछि छैल सके नहि, 'अनुप' सज मुखसौ अडआय ।
 फलमे प्रांस सूरि लखल अछि, जे नागरि-गुग वाज लखाय

[२२३]

मेघ सखल, न एगल मिलल, बरिष परीसके पात ।
 बासो फाही सासि छनि हाही-ओइ-खसस ॥

किल लरसो, पड़ोसमे रहनहु 'अनुप' सैद कदल न भजेछ ।
 दाह-औ-दुखी ओकर शवया खुनि, धमरु हनय धा अभिषक बनल ॥

[२२४]

बाछ-राध-सा अरिबको मरु उजास-रो गम
 पीसि दिई साखसो दौ, डोहि भगज लख ॥

जाल राध-सौ सुभ-सुखि-अरिबक, 'अनुप' राजास ऐनिक फिकरु पाय
 जग-दिशि देन पंति निज नज दया गुन शिखर-कोसो रही छायाय

[२२५]

जबहि छन्दर छयद धूम, खगुनो दीपक-देव
 सक प्रकाश को तिलो, अरिसे किलौ सखद ॥

देन हाथ-सम खुभन चदंग अछि 'अनुप' सुगद गुणयुक्त अनेक
 नदनि करत आसव प्रकाश ओ, अरस अरिहमे कोह जरीक

[२२६]

सुखी भिज न छलति देखति हैसति वञ्चकते बिचरि
 छिलत छिद्र भिज भिज बलि भिजि रहै शिव-सो नानी ॥

परीक मजि बनयेन चिज नय निज-लसमन निज-दर्शि साक
 दुखयामे पडि दिले न डोले भुकी हटे नहि 'अनुप' आवक ॥

[२२७]

देन छमे तिरि कान सो, छुटि न छै प्रज ॥
 काम न आवत एकद, सर सौक समय न

हम लाल अछि एहन लखसो 'अनुप' छुट नहि सुखनहु प्राण
 शर्प बलुगदा लजि, कलह धु, के न सकल एकदुदा शरण ॥

[२२८]

सजे साधन कोइको मोही काल कुजेन
 कन कनै ० उठे परे, देस कोन पैत ॥

हम 'हनका', दर्क मोहक त्रित साभल, समरे निकल करैछ ।
 'अनुप' खुभन दुम-देना उलटे-लगाछ, को कर १ इक्षद करैछ ॥

[२२९]

अलः हन शेषन-सरनिके, लखे शिवस खंवार ।
 को कोनै कल्ले, छुट अति काल छ भार ॥

नयन-पाण गरि अति अनुन अछि अउ को छुट सायक नोक
 शकर मगधय लोपाय लखि ! शिक, दायक अनुप सगने ओक

[२३]

कल-शशि-सूदन शरीर को, धरु कग-ध निब सख
 दहरी राखि दहि खेनलो हवा-धरी मत सख ॥

बृग-सौन्दर्य-भारम छिटि हे सखि 'धनुष' लंगलक ठक निभ सख
 पछा'री दह करैत हम रघु-रहु मत ल गेल छपहु, रवि दध ॥

[२३]

लौ लौ हलौ म कु-रख लौ लौ दिकु छरख
 लौ आवल र'खमा मपहु रघौ न गय ॥

जा'धरि नहि लखइत छी म'धर कुनक फाया सब लोक लगेछ
 'धनुष' जामन देखयमे आ'धरि विनु लखने नहि लखन चनेछ ॥

[२३]

कल-ननको निकेतन छसत, ईसत-ईसत हुत गाय
 क लखन भनि छैनथो, फलवलि-वपु वक्षय ॥

यन धि'शि वनराधम शोभिमत मै ई'वन-ह हँसवनि' नहि धि'श आध
 हुग खल्लत पहि गेल 'धनुष' ले कनखर कपी खल लंगाय ॥

[२३]

शित-विल वपल म रहत हँसि लखन पूग परकीर
 व'वयगक वदपरा प जगल के ओर ॥

मग, धन धनग म, दहके छान्छि 'धनुष' हँसत गुरा'धरि नलम म
 सलधन नर खेनुक ठक छि'शि, जगल भर-दिसि चोर मगल ॥

[२३]

धरि न लखल सानको उठली न धरु दह'गय ॥
 यो 'रमा' विग'हि लो, धेरो बोल छुगय ॥

स ल लल-सु'धि 'धनुष' रहल नहि, रह उठैलो सुन नहि धरि
 वेरी बोल छुगय गेल सखि राग विग'हि दहय दनि लीर ॥

[२४]

ग फा'र मो पाव गहि लो-लो नरत 'धनुष'
 धीन भगवत भीतिखी सीन हु आवय' सख ॥

धर कौट' लो समरा पय गहि 'धनुष' मरवली छिलह सख ॥
 धनम प'सि पगइको, दहरत, पावर कलनि मोहरा' धन्य ॥

[२४]

भल सखल अग्रत हवी धे धा क'हि धर न ॥
 धो ललवत म लखल, ललि ललको ॥ २४]

धनुष' मखे बान जा'य धधलो धो ठक कक' नहि ठ'कि ली'य ?
 कागक ली'य धा'कारक हुगक के नहि ललपाद म म'ध' ॥

[२४]

धन-अग्रत दखल नहि, दखल ली'य-गग
 नहु क' ललव-धर जाल गगन चलि'न ॥

धन अपराको 'धनुष' लख नहि केवल देख दखल शरीर ॥
 लोभ पूग खल गाय कल को 'विचका सपय हुग, मग दहि मोर ॥

[२४]

नल 'धन-रग धरे धर म'गन धनक'नि
 मगत न ल'चन लखल य लखल हो धरि ॥

धर नल 'धन' धरि'य मरक अ'छ 'धनुष' हुमर हुग छीया जालि
 वेग ल'धो हुग बाही अ'छ, धनु स'नि ध'रि'क नर' नहि न'धन ॥

[२४]

हुन छिनुन, पछु'को गिल्ल अलि दीनसा 'धन'य ॥
 अल व'धनको ध्या'ल धनि, का थल धुली प'धन ॥

कनगु'हग दु'ध पदु'वा 'धनुष' धाधिक धनम देव'य
 धलि धामनक फा' सुनि लोहर धनल्ल र' के मत ध'धन'य ॥

[२४०]

नैरा चेक न साजसां कजो कजो भयुक्त
 धन मत हरे ह हरे, लजो कहा पक्षय
 धुप न क्षतिगो मम दान कलशे कजो दुपय
 दन-मन गेहूँ नारे हरे से नकरा नो कहू कथ उपय

[२४१]

हदीक छडीक छजलत बलन वदन मुकुटको छिह
 कटक भजो नर भित्त पयो बरक भेदक हट नहि ॥

‘धनुष’ कलछेथ देठ न कुमति, सलगत लव निज मुकुटक छिह
 बंद कशि-पदकन सट कोला नट पथसे भक्तमन भेटलह ॥

[२४२]

नर भित्त वृक्षति कहे कहो कजो सायेभार
 पक्ष करल देल कहो, भजो कजो कजो बल ॥

पुति पुति निर पुछ ‘धनुष’ काठेपर क कहलनि शीहराजो भान
 को कहिन, कह ललल, सलगत लवि लचो हमार भान विधि भान

[२४३]

होहो भिरसाहा ! कथो नारे नरे कथाय ।
 भन आय आये नहो, आय आवन आय ॥

धनुष ननु नैह कलह ओछ हमार मनहुक नैह स्याय
 विनु लोभ देने न ह माये, देने भवे आयद गेव ॥

[२४४]

दुखदुखि चरज नहो आनन-भानन भान
 रनो भिराछ हूका हूय कानन-कानन भान ॥

दुखदुखि-मुलमे नहि भानक सख रईछ ‘धनुष’ धुप थीक
 दान-धन कोन सुकाय लोभ, कही सपथ मुने हम ह नैक ॥

[२४५]

वधो कथ विवाको कनस, डोर-कुरी भजे न
 विव ओने, छिन और ह, ये कवि छाने केन

वहिक बजोवाछि भान भान लव ‘धनुष’ न देवे डाम कुआस
 छवि मर-पौरि कहे ह छज-छुण गर्दपनन पाले धनि पाम ॥

[२४६]

कहल लवे कवि, कनल-ले, सा भनि सवन बसाव
 ननक न विव ललन भन, उपास विरह-दुपाव ॥

गर्व कपलक नम दूधके कह हमार सनसी धिल-लभार
 नहि ती ‘धनुष’ दूधक लालल, कोन विधि उपजति विरह-कुराव ॥

[२४७]

छान-छान न भानखो नैरा भो वन भान
 मे मुहजोर मुन-भो, कनह कवि जाव ॥

न न भान ‘धनुष’ नहि भासे नहि आछि हमार जलमें नैन
 ह मुहजोर भवन नम विवचन-वहावु नहि रहि नहि लेन ॥

[२४८]

हम हुल्लव ओछिभानको, धन भिराछो नहि
 देसा भो न देखे भिन देले वसुधहि ॥

‘धनुष’ रहि दुविवा भानिभ न छिन, सुखक हूहि कथि नहि मेह
 लल न नमसी ललकल नहल ‘धनु’ कलन अगकल रहि मेह ॥

[२४९]

लरका लैके भिराछि ललन भो विव आव
 लो भवानक आगरे, ललो से छुवाव ॥

वधो के लेवाक लपनी डाड ‘धनुष’ हमार लल आवि
 नह लो व धवधक आगुड, कुनयो कथि न मुअनवर गवि ॥

मैथिली में प्रेम का

[२६७]

हैं। तब आगे दिवस रहे, तुम बु काहि प्रेम लाल

राखति प्रण कष्ट हर्षो, के चुहलसो-माख ॥

मेज प्रेमसो हर्ष रहे जे श्रीविहित 'अनुप' सुन भि दार हंसि देखे ॥

वेह करज'मक म ल प्रेम'हितक, प्राण बला कप, सम लेके ॥

[२६९]

रही छूटु है छाछ 'हो' कलि हल पाछ अनुप ।

कियो मित्रस बसो वही प्रेम सखीने रूप १

'अनुप' देखि अनुपम पाछो, हम लहू मे गहलहुँ दाय ॥

है हर्ष । पल्लव सुभा छलिसे ल'प्य कर देखनि माधुप जगप ॥

[२६९]

सोखति शोभी तेजस, कलक'व्याप-सल बाल

साव्य बाल-दी'करी-भा रद, जे'मल लाल १

सोनक रंग-लल लनयालो 'प्रेम, साधा सखि मलय दूरि छाय ।

पार-समय-सम शीतक 'वैकुण्ठ', अनुप' सुन्दर अरि जगल जाय ॥

[२६९]

बाप' बाल, ता हर्षक है अलि ललकम, गुण माल ।

अच्छी शीत किलीसि जिल, जिले छाछ आधीय ॥

नोहर दूगप कदी 'मेह' घर अनुप' मंगल, लज्जल, छल, मान ।

जे अछा शीतक कदाहिले, शीतमक के देखि अज्जल ॥

[२६९]

रखल पूरा काल शो, छै जगप जनि, लाल

छल-छल जाहि परी अछे, शीतल छलीगी माल ॥

अच्छे गहि जग कपूर कृप मम, ल'वल'प छ लन'हिं जे अछि प्रेमस

छप-छपमे अलि छ'प ह'द अछि 'अनुप' नल'दल' ल'प' नल'म ॥

मैथिली में प्रेम का

[२६८]

'अच्छे' छ'के छाल कर जे अलि भकि बसलस

अब सख प्रेमचरी नो जग ल'म न अब ॥

मधु अक्षर कलि'रक य पदि नहिं लुभ जा'छ छलुव प्रियास

मान'दम बलि'प्राप्त जग'मि, एकौ क्षण सुख'र स-हृलस ॥

[२६९]

नयादि 'मि'पव प्रियास तलि, अछे नहिंलिन नहिं

सुनिमे 'मानसी' कि ल, हिलो दे दल'रि ॥

अछे बलसी दह 'अल'स नहिं, अनुप 'म'प'र सयक सेव ज'प ।

नहिं मज'पिपन'क प'दल, नहिं हो' सुखे भगल दल'प ॥

[२६९]

एव मन को ह'वो क'छ जग-रवि' छेस विमल

न'लि करं अ'लि न बदे, गर दल'प दप ॥

पिय मनमे रुचि हैव क'छि नहिं नल'यो'प' भु'प'र कद'छ

नलि कर दप अनुप न बल'छ केरा ब'होने अल'प बदे'छ ॥

[२६९]

नहिं प'प, नहिं भु'प मधु नहिं विकास ब'हिकन

अ'ने क'छे हो' अ' वि'प' अ'न अ'न दल'प ॥

नहिं प'प न'ह मधु'र सुमल-लल, दोस विकासो न'ह प'हि क'छ

न'ह क'छ'अ'लि'न' अनुप ल'प'छ' अ'प द'प'छ को लुभ देखे ॥

[२६९]

दल'प मध दोल'मे र'हो वु'र'लिन क'प'प

अ'न न'प पिय भ'पु ल'पे अ'ने अ'ने'ल'ल' अ'प ॥

'अनुप' दोल' अ'रि, सो'हर लो'लिन ल'न'दिन अ'लि न'ह'छ क'छ'प

न'ह क'छ'छे कोल' जे' अ'प'छा निज' छ'प'प' न'ह म'प' अ'प' अ'प'प ॥

世宗憲皇帝




दशम कुल के पुत्र होने पर शत्रु ने
कणक को एकटक और चढ़ा दिया आर्जुन का द

क० विद्युत्वाहक आवरणे^१ द्वारा प्रेषित^२ अथवा ग्राह्यतां विद्युत् अतुल
क्षेत्रात् वायवसी^३ धर्मेण वायु एक^४ शक्तिशाली द्रव्यस्य एक^५

卷之六

श्री २. भवन संस्कारादि, का ३३ न. ३३
नौवरा संस्कारादि ० १०० न. ३३

अनुभू' वैश्वि ता'हू' हाँ'थि क' प्राप्ता' न' माँ'हू' विवक' रहल' न' अ'न' ।
 हाँ'स' हाँ'स'प'न' शुभ' क'ह' क'हूँ' । क'ह' प'स'न' सौ'ल' र'वि' ना'न' ।

○

मम न स्वस्ति मेधा कर्मायुः शत्रुणे सुशान
 अहं पर्याप्त म न मन्त्री परद्वय पर्याप्त पान ॥

हो किन्तु अन्तरगतः नैऋतलक्षः शुभः कथा पट्टि पदार्थः पदार्थः
एकः समीपः पट्टल-क्षेत्रः धिक्कः अनुपः एकः कर्षः पत्तः पदार्थः

10

वर्णिक न दृष्टि वर्द्धनायने, तस्य तस्य वर्द्धः । येनास
सर्वे न वर्द्धी तयोर्धृष्टी श्रीमद्भक्त-संस्तुताः -संस्तुताः

[illegible]

○

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्रीकृष्णार्पणम् ॥

सोलाहों केद्वै कसल राम, नई दर नरु एक नश्वान
 सार्ग लला हूत हृदमें प्रेसक, शनि लाग्य कल शब्द नाम

श्रीलङ्का में विद्यार्थी

— 10 —

सम सुखी की=मे घने उभरी एक उगाति
हरी=हरी अगुनि नने पा शरीर दिव्य मी

[illegible]

66

[illegible]

अनुप नमः तन प्रसीद अहो ययै विष्णुक जाहा मानव
माने ते फलान् अनात्मक युग नव रक्षा भक्त साँठ दिखु मन्त्र

6

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ वासुदेवाय नमः ॥
 श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

पञ्चमः कण्डकोऽर्थकारः स्वभा प्रमोदप्रवर्धकः । अस्मिन् न आय
काङ्क्षयालुतां जायते लोभकर्म, मोघ संज्ञे अर्थाय पुण्याय ॥

一

नकु न
नाने पाते औ-पुत्रो पाद न नान
द्विधा-अ नानि द्वि 'अने' (द्विधा) नान ।

[illegible]

234

भूखां तां लोहं ककुब्जं हि अकारं मणिं अर्चये
 पादौ कञ्जं वाहृतं निषां मणिं भूषयेत् न वैश्वे
 =

१. दलवि का ाङ्गान्तक नवतमां २६ दलवा छात्राव
२. दलवा पुत्र देवत, छात्रां अष्टमां शिकार नष्टि कुल छात्राव

卷之四

कर्म कर्मण्येवाधिकारस्तेनात्र कर्माणि विमुक्तये ॥

[illegible]

—

तु सोऽस्य सप्त गीर्वाणं दधौ ॥ राक्षसं भक्षति मुखे ॥
 तं सखा ॥ वनमाला ॥ को, कोनिमल वर सूर्योऽस्य ॥

शत्रुपुत्रं नृकुलिं हारं सैनिकं नृपुणं वैवाहिकं गोकं नकांतीं गंतीं
सुदिनं सङ्गं सौभाग्यं सङ्गं सङ्गं सङ्गं सङ्गं सङ्गं सङ्गं सङ्गं सङ्गं सङ्गं सङ्गं

七

४५ कक्षायाः चतुर्थां तस्मै विद्यार्थिनाय
विश्वविद्यालयीय-परीक्षायां उत्तीर्णत्वात्

अपना के अन्तर्गत वेम ठा' कृत्य पुरम ४ धारा १००
तत्काल प्रमाण एम अन्तर्गत कोम नम-एन अन्तर्गत एम नालवत प्रमाण

3

[illegible][illegible]

1

सोह नमन इण्ण नळ-नगारि सोह न्हा
सोह नमन गीअन्ना भोह्म दण्ड नम

१०१२ अतः नरदं विदुः चतुर्न । ननु तद्विदुः कुरुते
 १०१३ अतः नरदं विदुः चतुर्न । ननु तद्विदुः कुरुते

2

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्रीकृष्णाय नमः ॥

पुष्पाङ्गुलीयं पुष्पाङ्गुलीयं पुष्पाङ्गुलीयं पुष्पाङ्गुलीयं पुष्पाङ्गुलीयं

△

ग. श्रीम. सा.ग. मुकुन्दा ईश्वरी कपूर एवं श्री ८
गुनगरी न. रा.ग.ग. श्री ८ श्री ८ श्री ८

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

【附】

[illegible]

गौरी अर्थात् गणेश अनामदेव, सुखदा, कार्तिका-१०॥
मुद्रा धारिता लोकाधिपति, धर्मोपायक, ईश्वर, ईशान, शिव, अविनाशिन ॥

三

सर्वे भूतान् सर्वान् कालान् चरितुं सर्वथा
पाप्मानं मुक्तं धर्मं ज्ञायते । न वाच्यं शोचन्ति ते जायते

श्री गङ्गा नदी के किनारे
 एक छोटी सी झील थी।
 वहाँ पर एक बूढ़ा व्यक्ति
 रहता था। वह हमेशा
 अपनी झील में नज़र
 डालता था। उसे झील
 में एक चमकती हुई
 वस्तु दिखाई देती थी।
 वह उसे पकड़ने का
 प्रयास करता था, लेकिन
 वह हमेशा उससे दूर
 रहती थी।

【附註】

तु गङ्गा, सखि ! तूँ ही लम्बा, चहिं भ अङ्ग बलि, मल
 कबली बिनु सायको कने वीँ शयव अकाल

॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 अथ श्रीगणेशस्तोत्रम् ॥
 एकं लिंगं त्र्यम्बकं सत्पुमान्वसतम् ॥
 सदा शिवं बभूवुर्माता भद्रात्मिका ॥

३००]
 नमो गोविन्दो गोविन्दो गोविन्दो गोविन्दो
 भक्ति निमित्त भक्ति बरें गये, निष्ठा के योगीश्वरों ने ॥
 नाक मोर्च देम हस्त करारन धाँक, अर्पण जहाँ ओ सुदर्शन नाहि
 नरे रक्षिक धर्मधाम कंकड़-मम, मान बर, के धर्म निष्ठादि

शिवधर्म शिवधर्म

[३०१]

हृत् करि भुम पश्यो छान-वा विमानादी धाम ।
 दरे तपान् धामो नर पलो पलीने भूय ॥
 गङ्गा देलर वर्धन से स्निह धुमि हलल ओहि पन्थे नम लान
 नैयो नैलि धामनारी सर मे 'अनुप' एहन नुअ प्रेमक भाव

[३०२]

नमो धामनारी मे गोविन्दो, नम ओरे, नम ओरे ।
 वही नदी विगत कादिराओ अबै नानने स्वार्थ ॥
 'अनुप' नाम सुनिर्वाह मे भालर, सन फिछु भागे, नम फिछु भाग
 विनमरे सबके प्रम नाहि बखरि भाव चहुँने भौह कसम

[३०३]

सोको वही भ ब्रह्मी करो धर्म भु तो दम पाछ
 उरने भाव छुओ नदी, मान छुँह लाल
 मुनिम भाल निज मे से देलर प्रेम ओकरा नहि करै करार
 'अनुप' बास नरदे मेने हरि उरारी छुँह न धाम नानाक

[३०४]

परायत, पाछल, खनि सन खनि कसोलेके धाम
 करले लो पाछल विमल, लारो कहे धाम ॥
 'नरे ल' 'वमल' मृदु च-कुचु 'धम' 'अनुप' पलायल मिय-मिलन प म
 'देव' कुलुमके पाल, पोले नानिधाम नानकके धाम ॥

[३०५]

सामोलेनमो गोविन्दो गोविन्दो गोविन्दो गोविन्दो
 क नानिधामो गोविन्दो गोविन्दो गोविन्दो गोविन्दो
 प्रम काज लो मोहनली कर, देनव लो 'छु' पानधाम
 'अनुप' विनमरी लो 'छु' कर नानिधाम धाम उर नान

[३०६]

मोर्च नरालो गोविन्दो है, वसन्तिक भौतिक एक नर ।
 हन देनवनकर क वे नाना विनार ॥
 अल्ल सल्ल धाम लो दिन्नाल, देलर प्रचकि 'अनुप' एक देर ।
 लो 'नानिधाम' अलि कानक 'नानिधाम' गुण लुअ दुरा केर ॥

[३०७]

आलवन-धाम विना, नरे न भान वपाय
 किति नाके दने धामे, पक प्रेम लाल ॥
 काछल-धाम 'नरे' गुणल 'अनुप' प्रम नहि आन उपाय ।
 मे-म-नानिधाम नाना धाम देलर, दुली भभाव लुओके जाय ।

[३०८]

नाना धामनार नरे, गोविन्दो गोविन्दो
 नरे, बाल अलि नानिधामो 'अनुप' लो नानिधामो
 'नानिधामो' लुओल 'गोविन्दो' 'अनुप' लो नानिधामो
 'नानिधामो' लुओल 'गोविन्दो' 'अनुप' लो नानिधामो

श्रीशाला में विद्यारं

[३१६]
 छात्रको बाले बाले धुनत धासनाके डोल
 गतिरक लेवन हल्ला विकला नाल करौल ॥
 सखिक सभमें 'धनुष' बाले आछि, हीरानामक गप सुनु
 मेर छोरैगडु नहि छोरैत आछि, अँसि हैसबाछि, विकलें गाल ॥

[३१७]
 किल दी-मिल भाव्य हल्ला, हँ और बहकाय
 बने कलल मतभावती, कलको लँह हल्ला ॥
 छात्र हि-ल्लाथ हुल्ल
 'धनुष' हल्ल बालि हल्ल, गालाक, लल-छापामें सखाइ छापाम ॥

[३१८]
 लफाँ लाल 'मिर्च'मिर्च मिर्चमी लेवनभुक्ति
 रली नैगल बोलना साँवझी-ली पुलि
 शानल, अहँ वैकुलि किज प्राणक, सञ्चोवन'लल' ललधाय
 'धनुष' ठाँव अँसि धरक कोनमें, सँतलजुही-सम कुल'न लललाम ॥

[३१९]
 नहि हल्ल-ली मुरेय धरो नहि धर-ली अल्लार
 एकलही कोर गलिअ अल-अल प्रल्लार ॥
 नहि हल्ल-सम ललमें लल्लाय यल, नहि ललल लल अल्लार
 'धनुष' क'मिर्चिक अल अँगल्ले, गाल अहँ प्रलि अल नल ॥

[३२०]
 रली देल कोनहो गु में दोनहो लुल्ले लल्लाय
 गली लल्ल-लाल लली लल लल लल्लाय ॥
 ललल लल्लाल लो लल लललल्लु 'धनुष' अल्लार
 लललल लललललल ललल लललल, ह हल्ले लललल लललललल

श्रीशाला में विद्यारं

[३२१]
 रली बलि लल लल लल लल ललल्ले लल लल
 बलि लल बलि लललली ललल्ले को लललल
 धनुष लल ललल लललल लल लल लललल ललल ललल
 लललललल ललल लल लललल लल लल लललल लललल ॥

[३२२]
 लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल
 लल लललल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल
 लल लललल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल
 लल लललल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल ॥

[३२३]
 लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल
 लल लललल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल
 लल लललल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल
 लल लललल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल ॥

[३२४]
 लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल
 लल लललल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल
 लल लललल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल
 लल लललल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल ॥

[३२५]
 लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल
 लल लललल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल
 लल लललल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल
 लल लललल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल ॥

[३२९]

अँदल बनल म भाषलो बिज बरसन ओले व्यास
छ. नि संगम-सहाय उर, भूतन यवन, हृदयार "

सेद करन बन नहि पिपली, अति प्रातिक दिन चित नमसद
रगा'सक अरुध वरध भूषणक, धनुष प्रेयसी उर लगयेछ ॥

[३३०]

कोट जलन काऊ अरौ सनकी लगन न जल
वै' लौ' भीन कोन लौ', नै न एरो लगदाय म

धन काँदि क्या कल फिय न'य ओकरा सनक उषा'न नहि कोन
जायनि नोवन नार जकी नहि धनुष' बाधि प्रानम लगदेन ॥

[३३१]

ननख धुन नमसाविली ओन वत पर जाय
लग-मुल र'त आरभयो नहि भू'उन मिस म ॥

'धनुष' जाय के, प'रु कय पर ' धनिचो हूय अरु'लकर भोक ।
एनि धा'रध-समय-तिय-मुलली सधु' लाग नहि' भू'उ' नोह ॥

[३३२]

सौ दूति जायलि, सुख नदीक, अँधिलली' लखलीस ।
ठ'बि छुपावलि पर हँसी, जग अघनि वलि ॥

गहू' सी' उराय मुलली' नहि' कर 'धनुष' अँधिलली' न'य लगदाय
सौ'च छु'इ'अनहु' कर, धनिचलि-सहि भाषक धा'य, लखलीस जाय ॥

[३३३]

रीम अखर हू पतिहिं, हार सखन रीम-काय

एरो रूपहि हँसिको छानि नैकी छूटि न छाने ॥

रीम च्यानिपदु में रवि फेदत एनि सा'डी 'धनुष' स्रणक लेल
छलिख छह'वाँ लगदलि रतने, लख कनेका वम नहि मेल ॥

[३३४]

लखि रीम प्य-का कटक धाय छु'अन व'ज
बलनी'यन रण-पदनिम' एरो गुँदी करि छान ॥

व'ज बाध छ'अनक फिल को'इ'न, भीमस काक डो'नको दुँख
वरिया यो दूग गहँदि भग'पयल, धनुष लाग धूप न'भान लेका ॥

[३३५]

लखीय, सरीक मिश-निकलौ, मुल'क मधुक वम मोरि
कर अँधिलली ओट करि, 'बहुलीनी सुख भो'ति ॥

धनुष' लग'य धुन'क मिय-सा'सी, निधु'ल अँदी'उ' कोलक वे'द
ह'य भय अँधिलक ग'हक हा'क' कोलक मु'हके देदि ॥

[३३६]

बहुल छव भाननसी, निधु'री लख लग'य ।
दरकि जा' अदि निग अँ, भीर बिहारी भाग ॥

रनि ग'ह'काहि मिय मकु'वा'के, लग'ग लग'स'न दूर हँदि भेकि ।
हाड हा'यनक दि'का'ग धनुष धुन'क लग अ'भन भेकि ॥

[३३७]

पति रसिके शयि'न' भयो, लखी लखी धुलक'य ।
कै-कै लखे छ'का'ली, अलो कलो छ'य वाय म

रनि गनि नया'कलल न'धुन'क मिय धनुष दो'ख म'खि हँ'य मु'लकाधि
के क द'अट'ल सख' सव मु'दित मर्म बुकि उँटि वर जा'धि ॥

[३३८]

धमक, धमक, हाँसी, सिसक, मधक, का'ड, लग'ग'नि ।
व बिहि रति सो रीस छु'अँ, अँदर अँकुलि अति दू'नि ॥

अँकुल धमकक, विधु'लव सिसकक, मल'भय अप'दय ल'प'द'य जा'नि ।
अँदर र'स'न सो'ख सो'ह रति, सो'ग सो'ख धनुष' अँति हाँसि ॥

सिधिलो में विहारो

[३३६]

जयति माहि माही नही, बहल कभी कल जाति
गयति मो हूँ वही भविष्य वीर्यो, बहल ॥

महि, नहि नहि पा यद्विग नित्य-मुखागे, 'अनुष' रदनि लगे अहि आग ।
रदनि बाल्य परंपरा भेदुनी नहि नहि हूँ सन जगत ताय ॥

[३३७]

पयल कोर विवरीज-रति, स्त्री सति प्रतीति
बहल कोलाल किन्ति नही मोन मही ॥

बहल रति बहल बहल अहि भग रति दगमे अहि अहल
के अनोर फकिरी रदल अहि, 'अनुष' मोन अहि ननु अहल ॥

[३३८]

विगतो रति विगत-रति, कही पति विद पय ।
होय गगनाली नित्य अर दिवो गुण ॥

प्रोक्त रति विवरीज करक हित पद धे भुवनना करदल भेल
'अनुष' विगत बहल-रति, अर रति, दग नमोके अहल देल ॥

[३३९]

गर बहल भगत व, बल बहल-रति बल
जग जगो विवरीज रति अलि विदुली विद भल ॥

'अनुष' भग बहल-रति कही रति ? बहल पुछलापर दे बल
पति-बहल-रति विदुली ललि, बहल जगल रति विवरीज बल ॥

[३४०]

रगल रति, रति रति-रति रति जगल सल
रगल रति रति विवरीज बल, बहल अल हूँ लेल ॥

गगल रति, रति रति रति रति रति रति रति रति रति रति
रगल रति रति रति रति रति रति रति रति रति रति रति ॥

सिधिलो में विहारो

[३४१]

रगल रति रति रति रति, रति विवरीज बल
रति रति रति रति रति रति रति रति रति रति ॥

रति रति रति रति रति रति रति रति रति रति
रति रति रति रति रति रति रति रति रति रति ॥

[३४२]

रति रति रति रति रति, रति रति रति
रति रति रति रति रति रति रति रति रति ॥

रति रति रति रति रति रति रति रति रति रति
रति रति रति रति रति रति रति रति रति रति ॥

[३४३]

रति रति रति रति रति, रति रति रति
रति रति रति रति रति रति रति रति रति ॥

रति रति रति रति रति रति रति रति रति रति
रति रति रति रति रति रति रति रति रति रति ॥

[३४४]

रति रति रति रति रति, रति रति रति
रति रति रति रति रति रति रति रति रति ॥

रति रति रति रति रति रति रति रति रति रति
रति रति रति रति रति रति रति रति रति रति ॥

[३४५]

रति रति रति रति रति, रति रति रति
रति रति रति रति रति रति रति रति रति ॥

रति रति रति रति रति रति रति रति रति रति
रति रति रति रति रति रति रति रति रति रति ॥

[३४६]

भाक भौहि, नार्हो फलै फलै फलै नैय ।
 दुखत ओठ दिख अंगुलि, बिरो फल नैय देय ॥

‘अनुप’ सिकारहु नाक ‘अहि-नहि’ के तैय फलनै फल फलै छिथ ।
 दुखहि अबर अंगुहसँ प्रालस सुखसँ पासक धरिहुँ दीय ॥

[३५०]

सरल धर्मल बिल-धुरै मको, फल-को अहित डरन
 गोप निवहि ओहिने, नैन नैल-नौगल ॥

रल तुम सिकलवार सिक-धरनक के-के धावा ‘अनुप’ फलक
 नुन निवाहहि बिलवार मे साख देय-सेख-नीगलक डेक ॥

[३५१]

छा मो’कर मगलोगनी, धावा डलड भुल कथ
 जानि नहि तैय नथरै, धाव पलसी दुख ॥

छाँल सुनल जैनहि सुननयन, भुल डलदाय धल अकवाहि
 फल स्यासल ‘अनुप’ शैल युनि, ई प्रीनमक दुख ‘अक’ नारि ॥

[३५२]

प्रीनम दण भोजन विषय, पावन परल सुन नय
 जानि निहाकि अकाम-लौ भेकु न होय दखाय ॥

सिकक छाँल भय कौलवार फलके परसि ‘अनुप’ सुख पाय
 जानि बुझि पवि जनु अमान मे प्रणव भय पवि फल न जानाय ॥

[३५३]

फा सुंदरीको आरतो, प्रीतिविषय लौ पय ।
 पाठ दिखे नथरक दही, दखक दौल लगाय ॥

कर ओठाक नगीनासे लखि पवि-प्रीतिविषय ‘अनुप’ अति नैक
 दुहित लगाय एक दण देख, सुखर छनि, व दीय शरीक ॥

[३५४]

मे ‘अमर’ सोको लुकि, सुख पुनको जिग नय
 दुख भिषयाने नय नयौ, दही नो लगाय ॥

‘अनुप’ फलक, सुनल बुकि हम, पूछ लुगलहुँ ओकर लग जाय ।
 डलल ललैलहुँ गदगदि लेकक, दमहुँ मोलहुँ गरमे लगदाय ।

[३५५]

मुँह चवार्न छै ललि रहौ लो नो अल-सैन
 फरै ओठ छै फलक नय यथहि ज्ञान देन ॥

देख लल छल पय उवाचिमुख ‘अनुप’ भुव सुनल मदि मोख,
 दार फडक रामाझ मोल नन, आँखि चवार्न फलदहन मेक ॥

[३५६]

नरस लालच लालको सुल्लो धी लुकल
 लौह करे, लौह नद, दल भौ नदि नय ॥

गमालार फलक ‘अनुप’ फलक राधा मुगला मोल लुकल
 यण काल हलैल अंगुली ‘अनुप’ लौह’ कह देल न जाय ॥

[३५७]

नहु वही अहि फलक फल’ नै नहि नहु
 दुखे नगीन भँह दी हिलक, नहि नो ललन भु ॥

‘अनुप’ दख बहि वैलर अभय, दैलल छन क्य घर चोखिआय
 दुखलल तिय-नह लगाल मेकरी, एका क्षणको दलक सुखाय ॥

[३५८]

धन लगामो करि दही भयन बचनो लय,
 अकलि सुँललि हँ भिहँ तिय अकलि भुकि लुकि दाय हँ लय ॥

अँदना पावि चवसर मे बाला ‘अनुप’ फलै फलै लुकल
 फलै, दुखे दीन दलिके नहु लुकि-लुकि, दँल-दीन दही लुकाय ॥

[३६३]

कले कुनी हकि चहुँ ना मरुये न धामा
दुहलि कदि दुमयो मरक, लज्जा-लज्जिकि धरि जास ॥

कोसे मन जिगुण कह करुण 'अनुप' अरुप न तथा लज्जाप
कामिनि-कदि मचके मलकी-पद, लज्जा-लज्जिकि दुदवाली द'विजाप ॥

[३६४]

देक पोर मसौषमी-बल, न नैलि अवार
दुहल हिय मयटाकके, लुपत हिय लयटाय ॥

लोरायुकी सेन सोलको, धनुष वृद्धि गहि रक्षे शवाय
हियसी लज्जि छपिछ परपार लुक्क ससर हियसे लयटाय ॥

[३६५]

छात्रि-छात्रि अँकिलन अथछात्रि, अँग सोरि अँगार
अर्थिक वडि नैदन छटकि, आलस-भरी अँगार ॥

आप रणीसली अनुप डँकिल नन धरिपनि करहि अँगडुंगर
आप उडि, लटुंगार पड'ये पुनि, अलस-दरिद्र, हँसि शरिद्र अँगडुंगर ॥

[३६६]

नौक-नौकि वडि वडिके, पौ-पौरी परभार
दौक मीद या ली, कागि गर निरि सार ॥

वगलि कपड पदिल लहि सेली, मास-काक 'अनुप' ललन'प
अलि निद्रामि रदक धारागे गारन एकछि लुड पडि जाप ॥

[३६७]

लाल लल अँकल, उमरा भरे नैन सुलाल
रानि रानी रनि देलि कहि और मरा मराल

लाल राधे अलन उमरा गुल 'अनुप' रहल अलि दूरा मसुकाम
आहुक है लपले ललि निर्दोष-केलनेल रनि कहे सुलाल ॥

[३६८]

कुल-भवन लज्जि भवनको, वडिअ मल्लिकयोर
कुललि कली गुलचकी पदकाद 'अहुँ' और ॥

कुलभ भवनक छेडि ललु कद 'अनुप' गवन निन नन्त-विशोर
कल गुलचक फल्लि रहल अलि, कद-वड' रन सुनि पड चहुँ और ॥

[३६९]

नाह प लीस लालिअ भई, लुटी छलनिकी सोम
पुव कलिअ, धारी करल, खारी मरी लाल ॥

नहि न करल शिद्र 'नद' भल छह लुटलद लुलक मोरु-राय
चुराद' न डिंक भिफुडय गुलाल' 'अनुप' कर् लुह एहु काक ॥

[३७०]

मो ली मल्लिक भलली, ल नलि भललि भेव
करी देल अह पदकी, भलको पुव पसेव ॥

लमरा'ली ललुल कर् छल 'अनुप' न भेद कहेलद
ननक पसेना गुल म'पसे भाल कही रलि कैल ललाम ॥

[३७१]

भरी देमाली रलको, लल' भरी एल
अलली है, ली है लिये कर् द'माली नैव ॥

सलि लालिअ भल लाललामे, छल लुल चम भरलि है छेक
पवन लाल गुल अललालि है ललुव सपरा ल' कहलल नैक ॥

[३७२]

य' दलमालिअ लल' र' अलमाले गल
कर धर उल' अल' लल' अल' लल ॥

अहुँ लल' लुल लल ललक, धनुष लल' है देक पडि रल
लल' कर ल' लल' अलन लल' हल अलकल ल' है देक लल ॥

[३७६]

क्याच उपपत्ति, कस सुधति, रात्रिहि कलक छुपाय
कय निन कल-वसित अउर वसपन डेअन जाय ॥

अणहि उवाँई अणमँ छूँई, शैल अणमँ अनुप' नुकाय'
वसिसौ' कानिअल अउर मुकुमौ, लखिनहि मय हिस बीनल जाय ॥

[३७७]

औन अण कनोवकान, गसो अने [प्रकाश]
अने अलीक भए को को कनो पट जाय ॥

हुग-हुसार्क कानिन अँछ आने, मै ससौ' मानल पिरमाज
छमल ल'अ पट 'अनुप' प्रोसमक, अनलि प्रेममणि ई अउर 'अज ॥

[३८१]

किरा छु विवुन उआवक, कनिअ को नरनार
उके-व दपी 'करति, दस शिलक लिमर ॥

कनिअ क'सौ लिखुक उडाको, 'अनुप' लिखक विख नैजनि अण
देह तिलक कोने ललट-पर देवि-देहि मै शिखरे माल ॥

[३८२]

धै' धवि गाय धरौ उदधो' हार 'अय न
आयो मोहि मनेग मय, माग गुमान मै ॥

सुअ मन मय-मनहु छु'अल 'अनुप' मयन मुछिनमँ सौ'र
सै वान' गहि रोज क'अ मै हार-द'अ' देव 'वय न भु'रहि

[३८३]

पलनि पीक, अवन अण 'अ' मझाम' न'अ'
आइ मिल छ अण' कनो मय को हो काक ॥

पलमँ पाक 'अधरपर लजेन 'अनुप' भाऊपर आरन छाँ'र
आर सेदलहु, कोलहु मै मय देण अनल छा अको सु'र'र ॥

[३८४]

औई लोच नई गह्वरि, रै अचकई धेन
देक विखो ई विरनयन कोने 'रौ' ई मैग ॥

अ कानिअ अति गह्वर शकुल' अमि बैसाछ काह आधा' दोन
'अनुप प्रोसमक लजिल लखि हार, न'अ गेय मुत कोलक मैग ॥

[३८५]

गए तर नयैर करि कल कानिअल वृत्त लोच
लोच नहो' अ' लोच को, लु'न-मणि अलक कनीक ॥

'अनुप कानि' नु, 'अ' अलिके किये करैछिछ लणल अर्थाक
ल'अ लोच नहि-धो'क 'अलपर, अलक क'अ भूषण, म'अ'दीक ॥

[३८६]

अ'अ क'अ ल'अ' अ', अ'अ-कोयन म'अ'
ल'अ 'अ'रि' भूषणको, प'अ' भूषण' लोच ॥

अ'अ ह'अ-अ'अ' ल'अ' 'अनुप' 'अ'देक 'अ'अ'छ छ'अ'
पडल 'अ'अ' क मयन-ल'अ' 'अ'छ ह'अ' मयन न'अ' म'अ'अ'य

[३८७]

अ'अ कोक-अ' अ'अ अ'अ 'अ'अ जाग
अ'अ'अ अनुप'अ' अ'अ 'अ'अ अनुप'अ' ॥

अ'अ ल'अ क'अल सु'अ'अ अ'अ-अ'अ 'अ'अ
अ'अ ग'अ मु'अ'अ'अ अ'अ'अ 'अ'अ 'अ'अ नैग ॥

[३८८]

अ'अ 'अ'अ क'अल क'अल अ'अ
ल'अ न'अ ल'अ अ'अ'अ, क'अ न'अ'अ अ'अ'अ ॥

अ'अ'अ 'अ'अ'अ प'अ'अ-अ'अ'अ अ'अ'अ र'अल ल'अ ल'अ'अ
'अ'अ'अ 'अ'अ'अ अ'अ'अ ल'अ'अ 'अ'अ'अ 'अ'अ'अ ॥

[३८६]

गहन-कावसे कानजली सर न मिले हृदय-ध
 ऐसे दिले धक्करल फिरो, पर प्रिराएल उर अलग ॥
 सर सर लमक नर्भन नहिं छुटलह, धनुष सुमह भेषर सज्जन-ध
 कल जहाँ चिह्नैस फिरोह राह, किधु द्वियक विदराधद अ प ॥

[३८७]

पद के शिवा कल धर्मियत नर्भनल छया छया
 हर हर-छर कर्म केस यह गर रड छरको रस ॥
 पटके निकट किशक भयो लह ॥ शरीरे तुल्लर धनुष सुभेप,
 भक्षण-दास, लव-देखासी है शोभा कर्माछ अंधर विहीन ॥

[३८८]

सो हूँ यों कालि लो, छाने कास विरस मोय
 सोरे ले उर लाइये, काल ! कालियत पाय ॥

हमरहुली योसिआरत है करि, लकर जीमसे लागल नाम
 'धनुष' लागवह ही दिव तक रहि, पेर परैली है धनदसम

३८९

लालन करि पाये तुम दोरी सोह अर्थ न
 भीम को धनिकी प्राप्त करे धुकार नीव ॥

पकड़ल बेलापार मछि छपरछा-जोरी, धौलहु सपल हजार
 'धनुष' गयन सान्धिक लम 'शोर-चाहि, पाट कहेछ पुनारि अंधर

[३९०]

तुम करत करे हुला ! मुल भंस छरि चोहि ।
 जोरी है गुल राचरे, कलस कबीली डोहि ॥

तुमल कैल रनि छपे कोन पारि है छुरी, मिले हुग 'धनुष' स कह
 उचिअन हुग गुल अर्थक दौल करि छील सजाय श्याम सु-नयन

[३९१]

मरकत भगवत-मलिन गल, दनु-कलक गल
 नील कानसे भजकल, लाल-गति नल-नल ॥

ने ल मर्णक नालन विष जलसे ननु निर-शरीर-मनि विप्रधक वेस
 लान जामा मध्य धनुष से ध्यमल मनधर लह नल-रिच ॥

[३९२]

वेसोय शरीर परल, कंग अकर मोह
 छानीकी लानी ग विष भनी छपल धर ॥

नुगलधनिक विषसे लपटैरे, वेसा-चामह पडल जे कोहि ।
 उजेल जामा विचली अर्थसे, 'धनुष' जालि पडलहु हुग मछि ॥

[३९३]

भारीकी चिल कटपटा शरस अटपटे पाय
 पाट सुभाषय प्रकली कथ भये हू अलग ॥

विष चाह अछि आकरे लागल, शरपट पति पद धनुष पडेछ
 चरक उपाकाक भिकव छे कपट भाल जी तहिय अर्थल ॥

[३९४]

कल बेकल चलाइअल, धनुषकी चाल
 करे ऐल यह लवरे, सग गुग, मिल गुन माल

वध किरीक करछह सो करि, 'धनुष' विजय कमुनल-पुले ।
 धनुषी शरीक माल करि है अछि सबगुण अर्थक, अलग छी । तुम ॥

[३९५]

पाक-सो शेषति छे, गलक लगयो अग
 मुकुर हौदुगै भेषे छर विजायो लल

अह क भालसे लागल आरल छाने दूधसे लालि-अमान
 'धनुष' छपाधिसे नदिन-पय, है दूधमसे देवु है अलग ॥

[३६६]
 रही पक्षीर वासी सु शिव, अरे शीघ्र, किन्तु, नेत्र
 लखि स्वरसे निर आन-रति, अगहूँ लगल हियै न ॥

रहल एकहिने पलंग-भासिके, भरल फाँधसँ, झू, मन, नैल
 पर-शिय-रति-अलि पक्षिहूँ स्थापि, जागहूँ तिय, हिय भगुन' लखै न ॥

[३७०]
 स्था अकिन्तु धडुँषा किन्तु, किन्तु नेत्र' साध धरु ।
 सूर-वदे भावे रही, स्था सँक-सो फल ॥

प्रतिम बन्धन चतुर्दिशि वीथिभि, 'भगुन' न थियतह हे चिथ मोर ।
 स्थादधक समय ती आगल, सँक-सम कुलाय हुन कोर ॥

पुनः चरु भक्त शक्ति-कर्म

[३७१]
 अगत को निमित्तको विचरि, हर बार रही थियसँख
 लख लाग अगई चरुभक्त, स्था लखौँ हँ नैस ॥

एतिह निमित्तमे अनल रहलसँ 'सिय हिय' जरे को-वज्रौ नेत्र
 'भगुन' देखि अति लज्जित पतिवके, लाख उमाहि भायल डूब देस ॥

[३७२]
 जेन महाना सौमि-पा, निरखि रही अनखाम
 सिय-संगुतिन काखी लखे, स्था लखौँ लख लाग ॥

सुनिन-पदक अछप अरतक, 'भगुन' लखै अनसनि डी नार
 देखि अरुमत' एति-श्रीगुहमे अति प्रत्यलित भेसि-विध द्वारि ॥

[३७३]
 कल लखल १ प्रिय-रति रतिनो सौमि गुनै न
 अह' कनौ जो जाय मे, लखै लखौँ हँ नैस ॥

लखल छह को' निमित्त धूमर, 'भगुन' दोर कविश्री नहि मोर ।
 लगनिदर हुन, लखि जाय को' ली, नेत्र अविमि की जोर

[३७४]
 प्रकथिमा हियमे बने, नख-रेखा-श्रीन भव ।
 लखे शिखर-भासि अह, हरि-ल-लख लाग ॥

हर-सम प्राण प्रिया हिय नम्रछ शिखर सम लख-रेखा-श्रीन
 भगुन' अविमि मोने पैल-वल सुन्दर हरि-रूप रगत ॥

[३७५]
 लखे चले लखे भाषी 'भगुन' को बर
 न-लख हिय 'विश-श्रीन नल, अरु लखे लख लाग ॥

चलिदारी' अलि लकल पदी भवि, 'भगुन' छाप नानुसार चलि
 लख-लख नल, ल-लख हिय लोहर, प्रोथ चढ़ाय पैल हिय लाग ॥

[३७६]
 न कल, न लखे लख अगत अह कल वेकल लख १
 लखौँ को ले मेन नो, लखौँ लखौँ ॥

नहि कर नहि हर-लखल अगत कल, को लख-लख लख १
 भगुन' लख-लख, लख लाग यद्वि, लख-लख लख लख ॥

[३७७]
 कल कथिगत हुन लख को लख-लख लख १
 लख लखल लख लख, लख लख लख-लख १

'भगुन' कही-लख लख लख लख १ रवि रवि लख लख लख १
 अरु लख लख लख लख लख लख लख लख लख १

[४०८]

सब-सब' लोहो नरे अलसी है सब पात ।
लोहो है दान न मेन दे, तुम लोहो कल आत ।

नव सब रंग' सोम दसल अछि, अलसायल सब 'धनुष' समस्त ।
नयन सठ' सभसुन भनि पावछि माया सब नो लोहो है दान ।

[४०९]

सब । भुजने भर दे, अरि सबसो पात ॥
नलक कच है दल दुख सूरज लोहो मुह लान ॥

'धनुष' दण्ड लक्षण युक्तसो, अरि सनेहसो मायल पुण'
'कल' कोस अदश वृक्ष है अछि भुजमे लगल पायक नृपा ॥

[४१०]

कल छहदश मे गो है लो न लु हो नलि सैन ।
'नलि' पयल-यलनो क्रिय, गुलछाका हो नैन ॥

प्रम 'गरसो' सनेहसि किदे छह ? लो हय नहि है सुलछि हैन
है सभसुन लोहो कलक अछि, 'धनुष' रंग गुलछाल नैन ॥

[४११]

पल सहि दान पीछ नृपा छल दानै सभ सैन ।
बल लोहो है, कल कोनिल, अलसी है मे नैन ॥

पल, लोकक रंगसो रक्षित अछि, छलसो भरल 'धनुष' दान सैन
वलसो किदे कलछल सभसुन, अलसायल है लो हूह नैन ॥

[४१२]

सब सदाक सैह लवि, भलि कलिल चकाव ॥
अलि अब हैर बराहलो, अर अमरि अलि छाल ॥

'धनुष' मोहि चरि सैल सदाह' नलिकरा चले अकारण अथ
हैर अलसी भुलकालो, ललि 'उपस' दल अलि छहअ आत ॥

[४१३]

छल आगत छल भुल-कलिल, पकयो कल छल
'धनुष' दानलो-लोहो हिरो पदल नहि न छाल ।

पल-दानलो भरल लोहमे कपट, कुपारि पकवल पाटि ।
'धनुष' आत-नमान सभस दिय है हरे जादछ क्रिय भनि भनि ।

[४१४]

है पदप अय लोहलो, दानलो हिरो सभस
सलि कलछि ललि सदा, गुलक पलोने दान ॥

हय सभस नेह सभ गलल, नैन लोहलो 'धनुष' लोपाय
गुलक पलोने लोह लोहो 'लोह' जो कलन आतिय दानाय ॥

[४१५]

नय कल अरि अरि, लो नये छिहने न ।
'वलक' हिनक चाल न नलि होहि न नैन ॥

'धनुष' सनेह इ लय सज भुजलो, आह आत सभस लो नलि ।
वल सैह लोहलो नय नलि अछि सब दिन-रात पछि फलु लोहो ।

[४१६]

'धनुष' नय अदश कलिल-लोहो रक्षक । छ सैन न, छलल
अन अथ नैन-निल दान, छल सभसो नय ॥

'नय' नयनक है नयक, लो नहि छल फलु रमक 'धनुष' ।
नय नहि प्रम नितय प्रणिन लोहो 'लोह' लजबल को चारनगर ॥

[४१७]

लो लोह सभ सभ आतलो, लोहो क्रिय चलाय
सहि छललोहो दुराधि है, अरि अलल अथ ॥

न नय लोहो पदस मोप छल 'दिय' लोहो 'धनुष' लोपाय ।
लोहो दान पल व लोह अथक, भुललो व छललोहो लोपाय ।

[४१]
 मोक्ष कदा कदा कावरी ? कम हुआ है ? न
 कहे देव 'वच' दासक, 'देव' निशुद्ध-से नैव ॥
 हमनर 'मिथी' वच 'हि' कहे हल 'यमुष' छर्चने छवि न सकै छ
 रङ्ग सुनैह-समान जयन तुअ रीतुक गङ्ग सकल कहि दै छ

[४२]
 पदकं बोलि पर कबो परो नानक भेल
 नागिन है लगति नृपति नानाजिकी रह ॥
 पदकै पौछ फराक कयल भइ, मइ। प्रथमक शेष लगी छ
 पलक देखल 'यमुष' आँखिमे, लागिनि सार लगल, बुझ दै छ ॥

[४३]
 सतिभरनी मोको कहल, हौं समुझी 'मनु' माय ।
 भेन-बलिह पयो रणर, न्याय 'नरति' नै जाल
 एतय कथा ह्य तुकल, फईछी - 'दासि-ब्रह्मरूप' जमर' नाहि न'य
 'यमुष' आँखिमे भईक फल-हुआ न'य नृपि कुनवलायल न'य

[४४]
 तुरे न नयभरनी बिने, या दावरी कुचल
 नयमो लगति है हरी हैमी सिरीही लाल
 नहि छवि सकल कुलाहि अईक है, हैकहु 'यमुष' प्रमाण हुआर
 छाती वदि ! निर्वाज है सी मुख, निर-समान अवलार अपार ॥

[४५]
 जाइ भाँखिन भूगम रजनी वरन-लहर भार
 वहे नाना भ्रमिषा दैमी, आँखनकें रंग लाल
 छे, शिव पद भगवती रजलक 'यमुष' नाना-भूषण भवनीय
 रजल सीह निज अक्षर रङ्गुनी है हरी । अईक आँखि समीप ॥

[४६]
 'मिथुन' कले दूगनि की भिन हँसो मुकजनि
 मान अनाथो मरिचको नाँव छिबो भिष जाति ॥
 नीरस दूगनी हैरद आ पुति, बिहूँसब, 'मिथु' दासक, उल्लास ।
 'यमुष' मरिचिना मान चललल, पदु दिद प'पल भागभास ॥

[४७]
 विरक्तो लखे खरी-खरी भरी अलख वैराग
 सुगनेपी संन भ अही, पालि बेनी के अग ॥
 अरुह उरभासल, कोयसी, 'यमुष' ठाँहि लख व्याकुल बाल
 खरा-नीग वैरल पति-तनगर, जाय सेजपर नहि, दिख दाल ॥

[४८]
 दैखि ईलाप जलख उरि, कहि 'व' रजनी है बेन ।
 मरिच भोकावे हैरि, लख मलीखि केन ॥
 हलह ईलाप उरि उर लखल, 'यमुष' फलन नहि नीरस आल
 नुअ दूग वैरल संलसी पीछल, सिथिल अमिद-सम अलि पति-गाल ॥

[४९]
 रसकेने कल सतिगुणी, ईखि-हँसि कोलति देन ।
 पुर मान मन वयो रीत भये बृद्ध-रंग केन ॥
 भभक फल भे, ईलाप-ईलाप 'यमुष' कहि दार्शनिकान हैन ।
 मनमें मान गुन नहि रहि सक, पति-वहल हैन अल केन ॥

[५०]
 भुँक मिठास दूग चोकोने भौंई लख भभय ।
 कल खर आवर खरी, सिम-खिन हैमी गजान ॥
 मयूर चोख मुल, दूग रिलकन अछि, भौंई सोक, सुन्दर अछि भय ।
 भनि अलर करेन लखि रैप, छाप-छाप दूगका भियमे भय ॥

[४२८]

पति-पुत्र-अपुत्र-पुन बहस, भाग माहको सोख ।
जात कहिन हूँ अति सुखी, रसनी-मग, गद्यनेत्र ॥

‘अनुप’ मान ओ माय जाड़ुमै पति-अपुत्र, पुत्र अहिक बहल
अति कीमल भव बिल कछेर हो, अति सुख कहिन मयलनो डीछ ।

[४२९]

अप मतर योई कर, भुव नगरो हूँ ठन ॥
सह्य होखी हूँ, जानिके, सोई अति न मोन ॥

सुखसौ देह पीड़क कने, सुखसौ याजे अंधित धन
सहजहिं हंसक मयाव जानिके, अनुप म पति-अपुत्र कर नैन ॥

[४३०]

सावलि लख भन मान अर, निर मांग योई भव
एही कान धी बिलन नेने, निर विपदा अरदाय ॥

मार्गमक लख सुगलि मानक अनुप आदि लग सूनल गाय
रत्न मिलन मिलि रहलि मयलन, लहरि स म म पीनमक होय

[४३१]

केम अंधकार भरे, एक नौ गदराय
अप मयाव को मने, मां भति छराय

हुहु निज मरल अहमनसो छी, अनुप जदल छी पके मय
के ककरा मने के मागे ० मति मां मयलनक मयन ॥

[४३२]

अपै अमन होई पुनल आनन-नेय नवारी
वैने बाने आननी, सीध छहरा-नारी ॥

नीन लफल मन सुमन लखल जे अनेय-मयक अनुप निवार
नल मजल पुनल-हीने तौ, सोख निमल यम-जल नारी

[४३३]

गद्य अनाल जाह व्ये अप पद अनादि
वो छ शूर पद हुनको अति सुनारी सोन ॥

सय पदाल छ विष मति हूतो, गतिके देखि मैन मति केल
अनुप लखल हुनक दान, निर लखि निज नग नारी ओहके देल ॥

[४३४]

मान कान बरति न हो अलि निमलान सौह
अरि अनाप जयन, मने होखी सोह ॥

म न कने मना न अछी, अनुप सपय देखे उलटाय
कान सनल हल मुन भुके को, क लखनल सनोय सुख पाय ॥

[४३५]

अप वादने आनको, अपि अरु कानि ॥
अक बाने न रल अरि अक निज मने ॥

कानक पादनि अनुप अधिक छह, कान पदलन छिक द चान
अव-कलीवो नहि विहार कर अपर नैह सखि निरचय जार्न

[४३६]

अप सन मल गय सुख कानि लखी अप
नल अरि अप म नल अपि कने नल ॥

अनुप सनल अपान कोयक वाज साधक नारन धन
कान कान ह अछ कोमा ह नैह अपल निरलन मूल नैन ॥

[४३७]

अप हू लखी म ते कान धार सौह
ह ह अपा देखी अप, न हो छी अप ॥

अप लखल हल कानयो निमन न न म म सपुन लखल रहल
अनुप अप हू न हो मलन छर कानिक कोयल अप लख

[४३८]

पूरे वा रने मरे कर्तुं प्रकृति न जन्म ।
 चंद्र माही सांख्य हूँ कथितं ब्रह्मण ॥

अरे दूध मेधुर स्वभाव है 'अनुप' न कोनहु निर्धर्म भवलोछ
 प्रम भरल नियमे तबलहुँपर तुल मन नैरल वृद्धि पड़े छ ॥

[४३९]

कथ्य निर्धर्म के निकसे छै गहूँ मे दू पान
 'अ' किसे न क थरो, दला दल बहू मान ?

निर्धर्म कर्मगतहिंसी लकड़छ छै 'नैरो' भुजने हूँ नई दूर ।
 कह सौँ एमेक मान नल तनमे, अनुप लखह, नै भरलह पूर ॥

[४४०]

वा रल मधुमे आन बल, कौँ झुटिअ मति, छै '
 जोग भिदैरी कथोँ दल, बोधी ' पारक अँपूर ?

है चलहि नर्सि देम पूर्ण लक्ष्य धूर कुटिल मति पर बस साँज
 जाग नैरि अँगर नैमपर 'अनुप' कोना लक्षी ? हो ल'छ ॥

[४४१]

हूँ, हूँ ' अरुत—वधर्मि दूग, सखल करे सब खोल ।
 देज सरीबनि दे धरै, हैसो ससोकी दाय ॥

अहह वैरे तिन मुख छव नि 'कछु, पूरे लकल ल'कक दूग अ'य
 कुहनि कुहनि कमलिनि सब कोन, 'अनुप' भुद्धि क हो जर सर हवास ॥

[४४२]

गोशरी गरुड न कोजिअ, समय राहागहि पाय ।
 भुज्जी जोषन जोड जा, माह न होइ सोझाय ॥

नै परेधन पति प्रम पार्थिक, है चलहि नई करह गुमान ।
 नैरय जावन छै डेर छ'ह हो अनुप म वसे से हर पाया ॥

[४४३]

कहा भैरुता गेलस ? भलो अदधर' जग ।
 नल हैसो'हूँ ? नई भोई सोई ? जन्म ॥

पाँह खोलमे की पैखर नो ? 'अनुप' सजल अदधर है कोन
 न ल सपथ बैलापर दल-मुल रक्ष भेल नूँ, अछय हैसै न ॥

[४४४]

लक्ष्मी न नईव 'आम लल न सगरी न बंध ।
 लल लो'हो किन अद नह नवोई है नैन ॥

'अनुप' कोय भुन बलन छति ई, कै सङ्कोच रहू नई प्रयाग ।
 प्रम लवलट्टा देखा देल ओछि स'गुराय नैरलक अधिराम ॥

[४४५]

अहो कौँ झुटि जायगे, हल दायर सँ कोय
 छार नहुंग ही नई अपे लेखन लल

ना अहक चरनं छुटि नैरनि हउ सङ्कोच मध्य धीरे श्याम ।
 अनुप नयन छल चहल अँखि अति, येल मुहुलना धामन सखाम ॥

[४४६]

अनल है दल पाप, रोकक ' रसो'री पास ।
 नैरौ लोको कर्मन नो'हो अदो निउल ॥

र'लक विरस अमहुँ मे पार्थिय 'नैय रसवत' पाय, रस नोक
 अनु कुसियारक क'छिन नैरुम, 'अनुप' मधुरता रहै अर्थिक ॥

[४४७]

कथयुँ सन मल न कम थाक बंद उपाय
 हउ-हउ पाद गरबे छ चाल, भौने छै'न ललाच ॥

अ'नहु सल मान नई हो'छ भेल 'नैरल सल भैव उपाय ।
 हउ हउ गल-न्यामनिध' नैय अपनहि 'अनुप' छुट्टा ललाच ॥

[४४८]

वाणी मिलति न बिटो। माय ! कसका ५५
 नय पयो कसुने । । पुषकाका ५६
 अही रातिनी नाइ मेरु नहि, कसका सुल 'अनुष' है मात
 ने अइइलक फुल है वाहुन मेरु' भनि हिरौ सजान

[४४९]

आध आध अही कही मदन माय मारा
 दूनि कही माइ दसि २ कला 'बेगुनिय' कला ।
 भल कौनहु, मेरुहु अपने ने 'अनुष' मेरुवे सान-मदु'र
 दसि 'कैक' है अही वैभवि आसि छानल कसगु'दय' छोरे

[४५०]

इस कानो के के हरा कानल 'अनुष' मेरु'र
 नहु कस' अइइ ५५, नहु नैर 'अनुष'
 इस हा 'होला, हाय हाय' के नुअ पद पानिक 'अनुष' लोहाय
 काय आसु सनने लइ ५६, पसि'र' री नो नरालि पद

[४५१]

अप गलजान विष कसका, मने दूबाय न्याय
 नैर सनगुण करि सासरी, विष न्याय कय
 नहि गुरुभक्त बीचमे विषक कसल लुआयल सिरसी 'अनुष'
 अहुन दूधिक समुलक दर्पण ५७ मिके हटय लोचक पास

[४५२]

मन न मनुष्य ओ का इन कसका
 कौलु लोच 'अनुष' मिक 'अनुष' मिक
 'अनुष' मनायक मन नहि होइल, दुनि-पुनि पति - निषक समझे
 पतिक कीगुणक हेतु विनयमा रिझै, विनयमाके, सुल लइ

[४५३]

कस न पुन सने कान, ओ रसकी रस लख ।
 'कान'सिक ओइ 'कीरली', लोरी शकविष द्वेप
 नहि र लयन नहि साखल, मरु मेरु-रसक है कान
 सुल छप ओइल दूधक सान हो 'अनुष' अधिक कसगु'दय' लखाय

[४५४]

न अइव होलहुद' कर जगलसि गोप
 दुलक रोक 'अनुष' कर, ओने सगि 'मदु'र
 नहि आइरसी 'अनुष' ल'दरो, द्वियमे भय अलखन करैछ
 नहि क ज हि प्रकार मधु'रना दुमह 'अनुष' क स'दु'रक बल

[४५५]

राज विरस सने रहि' मान न चिहु अलख ।
 नैर औषध २ विष गुनी हाय पानाय ।
 मन करक आयेर 'रानि-दिन, दमलोपर नहि लक लोच
 गगुण दुधक जनेक लक'छ', अनुष' गुण'विष' हाय पड़ेछ

[४५६]

लख ओइ, अख वसन, कसक कसिज मन कीर
 क' करै, हो जति धरि—हरि, है लोही कोर
 कर कसिजसी ओइ देह का मन कडेर पुनि नोरस नेन
 अनुष' कस की 'हरि' लखिन'ह' मु'दल विकसि अलख लखि नेन

[४५७]

साहेको छति मान ने दलखरो मजाल
 लो पांसक-लो मान-सी, मान केवो लख ॥
 'अनुष' मे'स'र'ह' मनमोहनक 'मन'ह' मलक मान दुई गेल
 'ह' लख' अदि मान कलक-लख मान करैक लख विर भेल ॥

[४६८]

बल्लभ बारी लोचन छनि पर नदी-विहारी
भा रस भनरस गेस रानी, नीलि लोचन छक बारी ॥

सुनिन मोनिनक गुरमे मर्यापन धनुष' अग्न' निय मग' विहारी ।
एके देवि मेल सुख दुख जो क'य, ह'मा मूक, द'क अगार ॥

[४६९]

आर न'गि दम विव हामर बुलबुल गुन गुन स
नको मगो नम ड'कि करि गगनर सारन, मराम

पुनिक सुभग मोनिनक वल सुनि कनिनीके दोखर मुद मेल ।
स लक, ल हाम्य, ल गवे नधनसि, 'धनुष' खली दिशि सो ललि देल ॥

[४७०]

ईह 'धुल' एहि प्रीतम 'अर' 'कपो' व मोनिन 'संग'र
अने का मोनिन गण, अग' ह'र ह'र ॥

हट, सनेह-रस ले प्रीतमनी, 'धनुष' कौल लोचन भद्रभा
नम' का-पाथल मार्ग माल लकि, मेल नहि मरमे ह'र ह'र ॥

[४७१]

विपुलां जयक लोचन-ग, निराल ह'सी गहि मोक्ष ।
मल्ल ई'सी ही ललि, 'सुख'—'अधी' ह'सी वरस ॥

आरन पमाल मोनिन गद लाल 'धनुष' 'अ'ह'सी कौलक हीन
सुनिनक ल'भल ह'स ल'ल आधे ह'सक मोच मेल स'न ॥

[४७२]

काइल लो वर हल भल, अहि ललनी विवास
मोक्ष सुनिनके सिधे, अचल 'ह'ली अलाल ॥

नाग' उगार ललगत'क बड़ 'धनुष' विकाम भरल दुख भ'र
लकर सारनी दखल अल'जिउ सुनिन निय दखल अगार ॥

[४७३]

शुद्धि पराजयन ईद व' नर न नगर
मय मंदरा क ह कलो भुकाइल सन ॥

धु'द पड'वन कइल निम मे, ज छल कइक ल'गुरन' मय
नम मसाद कहि कहल 'धनुष' ने 'विदु' नव नहि 'पक' मालक 'ग'र ॥

[४७४]

अल न'ग' अगार मय नही पड'धु'द भ'र
कलो ललनीके दुखल, मोखी लाल कोइ ॥

चलक ममय एद म'र द'न मुनि गज'र बार धु'दिक हल
आनि नगरक बाज क'गुरन 'धनुष' ह'र न' लन निय 'ध'व मय ॥

[४७५]

लल पराजय द'शन लल करि निय भ'द्रीन
'ध'व निय मोम बल'व 'ध'न-लुनक मु'काल ॥

'ध'वा क'निक, पड'निन' करनी 'ध'नुष' मेल छ'रक 'ध'न क'न
न'व ग'र 'विदु' सनिक म'ग न'व देव देव 'लाल' न'रक अ'नि ॥

[४७६]

र'ह'र च'कल ग'म मे, करि कोमकी अ'नेह ?
ललन ललनीके विल धरी, कल न पलन स' अर ॥

न'ह' रहन ई ककर अ'ह'मे ? न'खल ग'ग ध'नुष' हे ध'न
च'क कथ'। प'न 'च'न न'खलि कल स प'दे ह' ईह 'लल'क न ॥

[४७७]

एव भ'म छनि ललिनीके, म'ई चलन अ'न
ग'ह' क'र मोम प्रवीन निध, द'नको द'न न'च'र ॥

सुनि ललनीके, धु'द-मालसे—'ध'न' प'नि प'रल परदेह
अ'र हे ध'न 'लल' निय ल'ल'ले, ल'ल' द'ग मल्लर सिधेय ॥

शिवलोकं मे विधाता

[४७८]

लज्जन् वल्लभ एभिर्भुज सहै, शीले आमु न शि
 पाब्दे न हि माहं नो मनो गल्लगदी वीरि ॥

वसिकं चलन्त्य सुनि, सखा मेरिह सुपु, 'अनुप' न 'मिच्छु' वाङ्मार्त, तुल्य-पर्याय ।
 यथा पक्व-रसने हं यत्नस्यै गति वचस्पद दृगा निर नर दायि ॥

[४७९]

विठलौ कवकीं कर्त्तुनि, निर कर्त्तुि गमन धराय
 पंथ गच्छता आर नर दायो नो नम व ॥

दृष्यतेन दृशस्यै क्य-कुक्ति कर्त्तुि निरपय पति ज्ञापन नरिह देह
 विष नदगाह नं यत्नस्यै प्रम-यत्न नर दाय 'नियकं' नै लेल ॥

[४८०]

यत्नः यत्न-लौ हं कलं, स्य एव स्य स्य न्याय
 गीरम-काम, विविद-नरिह, निर यो पाय यत्नय ॥

नरिह-वि कर्त्तुनि, स्या लोका के ते देहाह नम सुलकं दाय
 'अनुप' प्र-यत्न-विन शिष्टिर नरिह दृशता नर गोल हं वल्लभ

[४८१]

अर्जो न आये नमन ईग, विरह दशर नार
 अर्जो काहा यत्न-यत्न नमन, चरणको दाय ।

अनुप 'विपद-न' धूलर नमो नमनो क-निन शस्त्रन नहि सैल
 प्रानम 'चलक' नये दृ-यत्न हं लोकां नमनय अद्याप एते देह

[४८२]

लज्जन् वल्लभ एभिर्भुज सहै, शीले आमु न शि
 पाब्दे न हि माहं नो मनो गल्लगदी वीरि ॥

वसिकं चलन्त्य सुनि, सखा मेरिह सुपु, 'अनुप' न 'मिच्छु' वाङ्मार्त, तुल्य-पर्याय ।
 यथा पक्व-रसने हं यत्नस्यै गति वचस्पद दृगा निर नर दायि ॥

शिवलोकं मे विधाता

[४८३]

नम नर, नरिह नम नरिह मर नम नम ।
 कर्त्तु सन्तं दृष्ट-नर, चल पौरि-नरिह नम ॥

यम-पुन अति वरदा, विरह-नरिह, 'अनुप' मरल कल दृष्ट-नर न
 चलल नमन-पुन वरदा, कर्त्तु-नर, नरिह-नमन-नरिह कर्त्तु नम नम ॥

[४८४]

'मरिह' मरिह-नरिह नम नरिह नम नम नम नम
 नम नम नम नम नम नम नम नम ॥

'मरिह' मरिह-नरिह नम नरिह नम नम नम नम
 नम नम नम नम नम नम नम नम ॥

[४८५]

दृष्ट-नरिह नम नम नम नम नम नम नम
 नम नम नम नम नम नम नम नम ॥

'नरिह' नरिह-नम नम नम नम नम नम नम
 नम नम नम नम नम नम नम नम ॥

[४८६]

यत्न-नम नम नम नम नम नम नम
 नम नम नम नम नम नम नम नम ॥

'नरिह' नरिह-नम नम नम नम नम नम नम
 नम नम नम नम नम नम नम नम ॥

[४८७]

यत्न-नम नम नम नम नम नम नम
 नम नम नम नम नम नम नम नम ॥

यत्न-नम नम नम नम नम नम नम
 नम नम नम नम नम नम नम नम ॥

[५३८]

सुगत पर्यन्त सुहृन्नाह. भोक्ता. तुल्यं सुगतं भोहि ताम
विषय एते विषयते नरे विषय विषयते ताम ॥

पृथक्क सुधुम्ने प्राथम्यं विविधविधे, सुकं तन्ते अस्ति सुनि तन्त ॥१॥
अस्य विना सुकनहि विन अकनहि सुकन विविधविधे पृथक्क मम अम ॥

[५३९]

अत आर्त्तित धीकं जार्त्तित उत उत, त. मानक ह्यथ
एते हि धीकं धीकं धीकं, अत उतार्त्तित धीकं ॥

अत उतार्त्तित धीकं धीकं धीकं, अत उतार्त्तित धीकं
अत उतार्त्तित धीकं धीकं धीकं, अत उतार्त्तित धीकं ॥

[५४०]

‘ता’ धीकं धीकं धीकं, अत उतार्त्तित धीकं
अत उतार्त्तित धीकं धीकं धीकं, अत उतार्त्तित धीकं ॥

अत उतार्त्तित धीकं धीकं धीकं, अत उतार्त्तित धीकं
अत उतार्त्तित धीकं धीकं धीकं, अत उतार्त्तित धीकं ॥

संस्कृतों में संशयार्थ

[५४१]

‘ता’ धीकं धीकं धीकं, अत उतार्त्तित धीकं
अत उतार्त्तित धीकं धीकं धीकं, अत उतार्त्तित धीकं ॥

अत उतार्त्तित धीकं धीकं धीकं, अत उतार्त्तित धीकं
अत उतार्त्तित धीकं धीकं धीकं, अत उतार्त्तित धीकं ॥

[५४२]

विश्व-विश्वविश्व पतनते नतं तन्तवि सत अंत
रहि अत उतार्त्तित धीकं धीकं, अत उतार्त्तित धीकं ॥

विश्व-विश्वविश्व पतनते नतं तन्तवि सत अंत
रहि अत उतार्त्तित धीकं धीकं, अत उतार्त्तित धीकं ॥

[५४३]

अत विश्व पतनते नतं तन्तवि सत अंत
रहि अत उतार्त्तित धीकं धीकं, अत उतार्त्तित धीकं ॥

अत विश्व पतनते नतं तन्तवि सत अंत
रहि अत उतार्त्तित धीकं धीकं, अत उतार्त्तित धीकं ॥

[५४४]

अत विश्व पतनते नतं तन्तवि सत अंत
रहि अत उतार्त्तित धीकं धीकं, अत उतार्त्तित धीकं ॥

अत विश्व पतनते नतं तन्तवि सत अंत
रहि अत उतार्त्तित धीकं धीकं, अत उतार्त्तित धीकं ॥

[५४५]

अत विश्व पतनते नतं तन्तवि सत अंत
रहि अत उतार्त्तित धीकं धीकं, अत उतार्त्तित धीकं ॥

अत विश्व पतनते नतं तन्तवि सत अंत
रहि अत उतार्त्तित धीकं धीकं, अत उतार्त्तित धीकं ॥

[५४६]

अत विश्व पतनते नतं तन्तवि सत अंत
रहि अत उतार्त्तित धीकं धीकं, अत उतार्त्तित धीकं ॥

अत विश्व पतनते नतं तन्तवि सत अंत
रहि अत उतार्त्तित धीकं धीकं, अत उतार्त्तित धीकं ॥

[५७३]

मार्गें वर भीरे बहुत, नगों विहारी को
पकड़े नीचे गुलाबों, पिरफरे धातु गुलाब ॥

विहारी विचित्र-मन एकरा दिवसे लारान विहारी-भारी अन्ति भाव ।
‘अनुप’ गुलाब-संलभों पकड़े, पलिक धातु नीचे भाव प्रसन्न ॥

[५७४]

मरी, मरी के दरी विधाय, बहुत खरी? धनि धाति
रही धाति-क्याकि धनि, अन्न गुल धाति न आदि ॥

कां छह टां १ ‘अनुप’ चाल देखा, मुहल, धातु ल ना नीचे भोम
कुहारे धाति लालि धातुने धातिप्रथ, धातु न कर्हिबक धातु नदीलि ॥

[५७५]

धारा धारा ओ दरी धातु भा मर रहे मर लार
दरी धाति, धाति दू, धाति, लर दराधक धाति ॥

धाति नोलाध ना विहारी, नोल कां ‘अनुप’ धारा मर नूध मर नार
धुली नार धातु धाति, नार रहे उधारीनारध क धातु

[५७६]

धारा नार धाति धाति नार नार नार नार नार
धारा नार धाति धाति नार, धाति नार नार नार ॥

नारन नारन धाति नार धाति ‘अनुप’ नारन नार धाति नार नार
धारा नार नार नार नार नार नार नार नार नार नार ॥

[५७७]

धारा धाति, धाति धाति, धाति धाति धाति
धारा धाति धाति धाति धाति, धाति धाति धाति ॥

के धाति धाति, धाति धाति धाति ‘अनुप’ नार नार धाति नार नार
धारा नार नार नार नार नार नार नार नार नार नार ॥

[५७८]

धारा धाति धाति धाति, धाति धाति धाति
धारा धाति धाति धाति धाति, धाति धाति धाति ॥

अनुप धाति धाति धाति धाति, धाति धाति धाति
अनुप धाति धाति धाति धाति, धाति धाति धाति ॥

[५७९]

धारा धाति धाति धाति, धाति धाति धाति
धारा धाति धाति धाति धाति, धाति धाति धाति ॥

धारा धाति धाति धाति धाति, धाति धाति धाति
धारा धाति धाति धाति धाति, धाति धाति धाति ॥

[५८०]

धारा धाति धाति धाति, धाति धाति धाति
धारा धाति धाति धाति धाति, धाति धाति धाति ॥

धारा धाति धाति धाति धाति, धाति धाति धाति
धारा धाति धाति धाति धाति, धाति धाति धाति ॥

[५८१]

धारा धाति धाति धाति, धाति धाति धाति
धारा धाति धाति धाति धाति, धाति धाति धाति ॥

धारा धाति धाति धाति धाति, धाति धाति धाति
धारा धाति धाति धाति धाति, धाति धाति धाति ॥

[५८२]

धारा धाति धाति धाति, धाति धाति धाति
धारा धाति धाति धाति धाति, धाति धाति धाति ॥

धारा धाति धाति धाति धाति, धाति धाति धाति
धारा धाति धाति धाति धाति, धाति धाति धाति ॥

[५२३]

यन्मम दानि विक्रयधरा नाक निर्दिष्ट न भूय ॥
‘युद्धे कृद्धे’ शिरःकोर उद्या कर्तव्ये भूय भूय ॥

अद्युय भर्तृपल पपुमि विक्रय-डाकु-त्यनि शिरःदिष्ठाक, कृद्धाकं लाल
मदवक मयगो से उठे छ कर्दह ‘कुल - कृद्ध’ ॥ कर्दह ही गोपाल

[५२४]

विजय-विजय कुल मम र्दिविजय उपजय, भर्तृपल समार
ममः भर्तृपल-विजय विजय मम भवत र्दिविजय ॥

दश-विजयि दश विजय कुल मल कुल मल मल भर्तृपल भर्तृपल
मया भर्तृपल-विजय विजय-विजय मल मल मल मल मल मल

[५२५]

विजय भर्तृपल मल मल मल भर्तृपल मल मल
मल मल मल मल मल मल मल मल मल मल

मल मल मल मल मल मल मल मल मल मल
‘मल मल’ मल मल मल मल मल मल मल मल मल मल

[५२६]

मल मल मल मल मल मल मल मल मल मल
मल मल मल मल मल मल मल मल मल मल

मल मल मल मल मल मल मल मल मल मल
मल मल मल मल मल मल मल मल मल मल

[५२७]

मल मल मल मल मल मल मल मल मल मल
मल मल मल मल मल मल मल मल मल मल

मल मल मल मल मल मल मल मल मल मल
मल मल मल मल मल मल मल मल मल मल

[५२८]

मल मल मल मल मल मल मल मल मल मल
मल मल मल मल मल मल मल मल मल मल

मल मल मल मल मल मल मल मल मल मल
मल मल मल मल मल मल मल मल मल मल

[५२९]

मल मल मल मल मल मल मल मल मल मल
मल मल मल मल मल मल मल मल मल मल

मल मल मल मल मल मल मल मल मल मल
मल मल मल मल मल मल मल मल मल मल

[५३०]

मल मल मल मल मल मल मल मल मल मल
मल मल मल मल मल मल मल मल मल मल

मल मल मल मल मल मल मल मल मल मल
मल मल मल मल मल मल मल मल मल मल

[५३१]

मल मल मल मल मल मल मल मल मल मल
मल मल मल मल मल मल मल मल मल मल

मल मल मल मल मल मल मल मल मल मल
मल मल मल मल मल मल मल मल मल मल

[५३२]

मल मल मल मल मल मल मल मल मल मल
मल मल मल मल मल मल मल मल मल मल

मल मल मल मल मल मल मल मल मल मल
मल मल मल मल मल मल मल मल मल मल

[५३५]

मम 'बहुजनका' सुभाह हुय, हरिब जान कौंसाल
सुरभीवन छी वैशिवन, नका मम यह मय

पति विछाह दुख दुखह छै छ पर अनुप मुदित निज नेह नय
दुखधरिजन-समान है स छी आपन दया कहेत ललाय ॥

[५३६]

काग प न छिलत बनव, कहत सै नय अगत ।
कहि है नय नेह दिवो, मेरा दिक्को कस ॥

नहि यनेछ कागक-पर लिखहत दारुछ लाल कहैत समाय
नय अर्द्धक हदये मम हृदयक, कहत चलि मय चिला 'पनय

[५३७]

'कह-विषक' चितही लिखा पाली यह पशय
अक-विहीनोयो धिध, सुने यथन जाय ॥

'चिर-चिरार्थ' बाला 'पुन' लिखनहि, पय पलप पलिय पन देख
चिनु अक्षरहुँ क धनुष पयक गुनय सुखस म पै पन पढ़ि लेल ॥

[५३८]

'मेरु' रसि हिय, प्रेमम चिला अनाय
पास काही बि हक, कोही रही लगय ॥

'अनुप' पौर अनाक हायस, लिखल छालमें पन अनाय ।
चिरह कदवा पानक वर्म कान, 'पन' छालमें लेल लगाय ॥

[५३९]

न भुरसो अर मरो, काल मम 'हरक'य
भय पाली बिहारी काले, कोही बिहय पशय ॥

करकल नरसो मलय उदयसो छींलि, काजक जल है योग
प्रापनाय चिनु लिखल पत्रमि 'अनुप' लेल पढ़ि 'पराद' रोग ॥

[५४०]

कर सै चोम लदय मिर, नय लगय, गुन नय
छाई पाली विश्वको निवा, योचन, 'पति' समद ॥

करत चूमि अक्षय मायपर अरुनो लग, एकहुँ अकयाहि
दक्षिण चोम परिय 'विषन'मा पढ़ि 'अनुप' पढ़ि ये समजानि ॥

[५४१]

सुगनिनी-सुगका मरु, अर अक्षय नय पुन
दिनको निज अनाम अनिम, पलप लगे दुखय ॥

पछि फडफिदहि, सुगनयन-परिय, नदल छल्लहि देख फुलिल ॥
अनुप पलिक चिनु अयनहि 'छा'लि, सावने यदही सुधक लेल ॥

[५४२]

यस बाहु ! कहत मिलि, जा छी औदन मुनि ।
तो सेहोसो भेदही, राखि शक्तिनो छी ॥

वप 'मुन' नय फडफड हो बरि, अयन अयन मय प्रापनाय
नै दक्षिण अनुप दारि 'अनुप' मम, 'मलय' मोहि छै धय अगार ॥

[५४३]

कको अनाम सक्षिपल नहि सयय, अर अर
हुई हुराई फूल-छी, ययो विष-अनाम-छी ?

कल अनाम सयस मयमिनी है चानुप न 'अनुप' मम अनाम
नय अनाम अनाम सुमन सम, छपत सुपेहि नहि नरक ॥

[५४४]

अयन मीन विदयन काहु कपो पुनम
सुम हुराई 'अनुप' दली मोल दहन निदय ॥

पन पवि 'विदय'को कहलक पयो पुकारि सुनि हसित मोलि
विनु भलि हुरा, हुराके ललि 'अनुप' देखि दन दीलि दिलि ॥

[Sing]

रस-भाजियो दोऊ लुलुसि, लख दिम होई, लई न ।
खसिने धिक्कल्लो मेस-पंग, अरि, विक्कलो होई न ।

॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टादशोऽध्यायः ॥

三

निर्दिष्ट कथा पठ्य-पुस्तक से—कवि, समीक्षक, व्याख्याता ।
नौ-नौवीं कक्षा के छात्रों को यह, कवि, व्याख्याता, समीक्षक के द्वारा प्रस्तुत हो ।

कर कर्पणे निष्ठु, खसक, मरक - निष्ठु, फरक पसेन खो लपटाया
ले आँखि नो अघोर मुद्रा भनि, कुटिलि नो भानु ? भूट मै जाय ॥

「**一**」

[illegible]

श्री श्री विद्यार्थी आदि दत्तक, देवी नारायण
श्री श्री अविद्या भक्त, श्रुति पत्र



शक्ति दत्तात्रेय सूर्यना. सुने, मातुल माधव^१ गंध
 शक्ति दत्तात्रेय सूर्यना. सुने, मातुल माधव^१ गंध ॥

आम-आसुरी^१ नान्य मसु^२, तिस मायदी मसु^३सुपय
 यल-यलप^४ भुकी^५, आ^६यल^७ समर-सम^८ 'यसु' म^९अन^{१०} ॥

١٠٠

सहृदयता का इसी अर्थी । तबम. न हीमल मर
कहि, कसो प्रादे हेमलत, पुनक, पलीये नास ।

इं सदात्त धिक्, तद्दि क्षति गारसी, 'धनुष' स दासि । क्षति क्षिप्त समीर
कहि शब्द इं क्षिये दीर्घ वङ्: पुलाङ्गत घास भरल, लग धीर

4

विधि वस्त्रो रज्जो मन्त्रक, लोको नमिका विज्ञान मन्त्रिका
 धर्मो देवि प्रकाश-मन्त्र, धर्मो देवि प्रकाश-मन्त्र

श्वसुषं पुलकयल लक्षि पलास-धन, नृभि श्वसुषुल वलानल, कंठि ।
भाणि लललल चिल वर्धन पर्थकनल, फलकं नलन एल धल्लि, चिल धादि

50

आस भक्तिं वसिष्ठ आ वसिष्ठ एवास्मिन् मादं
 तस्मिन् मादं वसिष्ठ ! ये ब्रह्मण्ये अस्मात् ॥

अन्तर्द्वयं मन्त्रं चण्ड्यं जातिं चण्ड्यं "समुद्यु" मन्त्रात्मकं जातिं ।
मुष्टिं पुनिं नष्टिं नष्टिं सक्तं सक्तिं । विनं युक्तं क भागिं ॥

27

माहिती दे पावक पावत, खोले पावत मात
मातुडु दिवत मातलां, प्रीतमां देव जालां

मल्ल एवमक सक्त विद्युन्मन्त्रं कल्लाद महि धनुषा वरुणैः ।
 तर्हि धडैल्लं सलभक किंई भौम दीव सवाण्ण अणि लेल्ल ॥



कष्टिभ्यो पक्वतः संसृतः शक्तिं समुत्तमं सुखं-साधय
 ज्ञानतः तदाश्रितो-सौ कियं दीप्यते दाय मिदुत्तम ॥

सप्तमसु, सप्तमसुग चतस्रसु 'सप्तसु' इत्यादि अत्र, एते भक्त
प्राप्तक अति उत्तमा विप्रकः देवक वना सप्तमसुग ॥

—

अहं ह्ये' अतो लयम मत्तं पाहि लङ्घन-भक्त माह
निगदिशु सुपादयो यन्त्रोर्वा भावति भावः ॥

अनुत्तरावधौ ननु कं त्रिम वेत्तुं कुरुकालिखन-शरीरममय
नैककुरुवदका कालिखनं, कालिखनं कालिखनं अनुत्तरावधौ ॥

[५६७]
 लिम बरलीहें नम किने, करि अरसीहें देव ।
 अर परलीहें न री नार अरसीहें मोह ॥
 अर न अमरौ हमा-साहि-हीन, अमरौ छोसा 'अनुप' यनाय ।
 अरि छुटि पापाक जलमहि, भट्ट-सोनिहैं सग अरहाय ॥

[५६८]
 पापम निमित्त-संविचारमे, रसो भद नकि अन
 नहि-कोर जायौ पद, कछि अरौ-अकारण ॥

पापस ओ रोग अन्तरमे, अनुप मेव रहि मोल न आप
 कबल लखि ननवा नकपाफ नहि विमक द'न अछि कान ॥

५६९
 किनहु अरति, ठहरि किमहु भुज प्रीतम-गद करि
 वरौ अरा देखति अरा, बिजु खरा ली सारि ॥
 शयिक नरौ, शय ठमक नरौ अछि, पापम गरसी भुज लंगाय ।
 नमकि बिजुकि सग काठपाद नरौ 'अनुप' वरौ वेव हपराय ॥

[५७०]
 पापक-अरते मेव-अर, दसक दुखद निसेज
 रौ देख पाके पस, भाहि धूम्र ही देख ॥

अनि उपल-सम, मेव भट्टा भिक लीन दाइक आ चुनसहनीय
 अनुप अर नन उवल, लाने कटौ देवमहिरो नर हीय ॥

[५७१]
 कुलग काम लजि देवदरौ कारि छुटति सग अप
 पापस पाप न पुरै पद, वरन ह देव होय ॥

देव, अंग-गुणन, शय नमाम, आ छलपद, भट्ट करै लहर
 पवलसैं है काम मून नह बुढ़ैपा 'अनुप' करै भुनार ॥

[५७२]
 उपा होहि अ, अलि वी पुँअ' अरति बहू कोद ।
 जगत आगत जगतसो, पावल-अपम-पको ॥
 'अनुप' प्रथम विमर्शक चण-दान, साक्षा । नान-नरसंग अघेछ ।
 मरिहक ननुविरो, होह भुजविमक है कदपि दन भी न सकेछ ॥

[५७३]
 दद न हरीको करि सक, पद पावल-बहु पाव ।
 अ'न गीउ बुदि नासि अरौ नान-गहि छुट जाय ॥

'अनुप' हरीको, दद नहि को सक, एहि पावल-बहु अरौ पाव
 अ'न गीउ अरिमा सकल हो, मान-गैद लरिमा' कुँज जाय ॥

[५७४]
 वरौ विरहीयो अमर विमर्श किरी कणाय ।
 'अम' किहू विमर्श न रहि, पावल आयु विमर्श ॥
 पुनश्च अमर ओ विरहीयो मे 'अनुप' होह नरसीक कडाय ।
 नमिक लागु एहि वरा अनुमे क्षण अरि भिनु विमर्श 'अरि लोय ॥

[५७५]
 अर लजि भव वपाउको आये सवन पास ।
 मेक न रीहयो वेमली, केम कुलमकी पाव ॥

युक्तिक नाम 'अनुप' अर छोहू, सावन है व्यापक अति नरक ।
 अनुप कदम्य सुनिधि छुँ धिके, दस्य कुललदरौ लेक न धीक ॥

[५७६]
 अमा, अमा, कर्मिने काह बोलेने अगोच ।
 एयो पवन अगत सीह, पावल कल विमर्श ॥

हुटिल, कलहो 'अनुप' स्वाधिनो, कहि कलाउ देसा' भाग्येश
 कलदा 'विम' लाल नहि होख, आदस पावलसंग परेश ॥

[५७७]
 जहि, उठ उठ नृत्यो भव', मानसक अभिराम ।
 अति परीणो वैजयो, शक्तिनि कल-अभिराम ॥
 कति छै कही एतेक वसेइ', एतसमै अमिल एक काल ?
 देवल्लि सेनहुँ 'अनुष' निमिषमें, जगज्ज बुझलि थिजळ' नाल ।

[५७८]
 किछु किय हे, एथ जाव प्यो, यह निरत भिराम ।
 नरे-नरै षडुँई धई, यई जगज्ज-अल न ॥
 ई पावस निरंधो निशामे, 'अनुष' इतल हा ' होस वैअय'
 नेतमक मतगहि उजाडल नली' एअथा लगनव दुखद'य ॥

[५७९]
 नम परां इहामा, दरि-वलो चरितिया काह
 किथा छैथो अय आम, सरद-भूत-नराम ॥
 अनुष' हुइल जन रोम्य से (परा), एथ, प्रसन्न पतिव्रतिन सेल ।
 शरद-भूत सज्जट अति अरि जगको चित्त-अनुक देख ॥

[५८०]
 जगै-जगै पदलि विधायन', एतै-नयो वरत अनन्य ।
 अक-अक सर लोक एथ, कलक-साह इमान ॥
 नै जो कहिस आन 'अनुष' यह नै नो बदरछ मोइ मनन
 सर-सरमे सर ललाक सुखा हो, ककम' दुखी एतिय हैमाम ॥

[५८१]
 किवा सब जा काम बस, जति कल अनन्य ।
 ऊँछा-सगहि सर अनुष कर, अराहम गहन न देख ॥
 कामक मनको देल जात अति, 'अनुष' बोलल जे छला अमिय
 सगहन कामदेवक नयो 'अनुष' अनुष-सद गही न देख ॥

[५८२]
 मिथि बिहार, बिबुरल मत, सुनल अति रमणीन
 नृत्य मिथि हेमन-बहु, जगज्ज अराक कोन ॥
 भयलि बिहल, मरेछ बिछु डिगहि विप्र-विष रसमें दहलि समाय ।
 ई नव सीति अलख हैम प्रह, जगत लुटका देल बनप्य ॥

[५८३]
 कायत-जग न जनिने, तेथहि कति सिवतल ।
 नर-नरै-षडुँई-लो वला, सगे एत-विन जान ॥
 अकल अवरत बुझ नहि पडछ, दयागि सेम, तप सीवल सेल ।
 'अनुष' गुल-विन, यत जगप्य सम, मान लकर अमिश्रय घटि भेल ॥

[५८४]
 कति एतल सीवल भिरद, निति-बुल विन भवगहि ।
 माइ-सरो-अल सूर-क, एतै एकोनो चरि ॥
 माय-वकोरी सज्जक अमलौ रवि-दिशि लख 'अनुष' दुख'य ।
 लख मांजल, श्रमग द'रम रवि रह राहुक दिहमे सुख पाय ॥

[५८५]
 कल-अल, सागर-अन, बल बुझाई भार
 कितिर-सोत क्यारु न निदे, विन अरद विन माइ ॥
 रजिगराप्र आभाक जगज्ज, 'अनुष' नुराह नुराह नूछ ।
 मिथार-शीत फडुना कम नहि ह', 'बिहु लवट'हि विप्र-विष सुख-मूछ ॥

[५८६]
 एहि न सको सब जगम, तेवतिर सीसके जान
 गरमी सीति गड्डे अरि विष कुन अरल मनप्य ॥
 'अनुष' रसल मरि सफल लुटिमें शिशिर-शीत-सुनतक जगज्ज ।
 अति अलि गरमी ननु-रवरी, कै कामिनि-कुल-किला-निवास ॥

[५६४]
 नरको नरकागो पर, हँसल कपोलन मग
 केसो कलनि ईचति यह, धनकिरवाको अप ॥
 धनुष गोरे अछि, गुल-गुल सेहो, ईसहरा माल महीछ लखाय
 सुनकिरवा-गर्जिक टीकाये ई गमारे तिल छवि दर्शाय ॥

[५६८]
 गहनाक सम गोरो, कपलअव लिलार
 हुक्यो ई, हिलाय, गुण-अर गमारे कपार ॥
 गोर गालसे, भरल शुभावन देवन दीका शिरपर साध ।
 नयन नवाय शमारियनाके, करछ सोढ नारि मन मोह ॥

[५६६]
 कति पग-धुनि विवई इवै, अठ दिवई पीठ,
 चको, ऊको, सऊको, शरी हँसी, लकीली जोरि ॥
 अगुन पीठ ई नहा बहल छछि, ससल पद-अवनि छुनि एहि अर
 झुकाँल, लखल, डरील ककिन से, लखि लज्जित हुगयो ईस जेर ॥

[६००]
 नहि अठनाय, नहि बाध पर किन चहुँ ओर लोक मोर ।
 परसि फुरासी के फिगि, फिदसलि, अंशलि न पीर ॥
 अनाप नहाय न, शर जाइछ नहि, गढ लखि निज प्रेम नय भेकि
 कल छुनि, छुड़गको घुरि आय, देवे कानु अलसे नहि नेछ ॥



सुनिनि सुनिनि

[६०१]
 घुँह पखारि, छुँवहनि निनै सीस सबल का लुधाय
 मोरि लोके, बूँदैन ने सारि सरीवर गह्वार ॥
 धनुष धेय सुँह, भाल-भेजाके, स अल सुधसो गिरके छुँवि
 रोक्के ऊँच घुँह भल लचिके, नारि नहाइछ पोखरि छुँवि ॥

[६०२]
 फलेंसलि, सऊचलि-सी दिने, गुण-अठस-विच जाँहि ।
 ओके पद लको कलई, अराय सरोवर मोगि ॥
 अरुसलि सऊचरलि-समि हियमे, सर-ननामके 'अनुप' निहारी
 कल अँकर-सिन नारि चलिछ का, लिलल पहिरि पद, लड-दिशि नारि ॥

[६०३]
 सुँह भेवति के ओँ बँसवि, हँसलि अँठवति नीर
 बँसवि न इन्दीया-जानि, कालेली के वीर ॥
 घुँह अँठल, देवी समेलि हँसि, लाल अणर सुनसई सदाय
 कलजयलि यमुना जलमे नहि धरै 'अनुप' जर नमि लनकाय ॥

[६०४]
 मलय पहिरि पद लह 'असो' कते मिस परमाच
 गुण कलाय परका लो प्रहर किने चलनयम ॥

रहा पहिरि भर सगुन 'छुँवह'—लगायक लोच, बेल सगाम ।
 निना कल हरिक नलाय गुण भवनरु 'अनुप' बेल अँठि धाम ॥

[६१५]

जैसे उसे हवाई फर्क, मरना मरे जगह
धुंसे वह । बिनाको फिरे, क्यों देवके आह ?

'अनुप' और सर्पस भुविगत धूम्र अलि, भरी उमङ्गले, गाते गीत ।
बिकसि धूम्र देव-विषयभूमि—सोनी सुन्दर 'ई का रास

[६१६]

भरि बनवै कल जोरि कै—जगत ह्यामके वेध
मने हँसो है लज्जामे धीर अनाजो है नेन ॥

'हाथ जार्जि, रमिके प्रणाम कर'—'अनुप' सनि प्रणामक ई दिन
नम नार्ति गवरीक गोल सनि हैसमुद्र अर्धिक, भर्त्सना नेन

[६१७]

संजी नाह, अक्षि-रस, कास राग, रवि-मङ्ग
अनुरे धुंसे ले-वे धुंसे राग अङ्ग ॥

झापा ह्वार ओ 'अनुप' कास-रस, रमिक-रङ्ग, भाषन अति नीक
हुचल दीह जेपु वे चुचल नहि सरल सौत जे हुचल अर्धिक ॥

[६१८]

मिहिले, ऊचे रमिक चान, धुंसे जहाँ ह्वार
यै सरा धर-भरन कर, प्रेम-प्रयोगि एगार ॥

'अनुप' मिहिले सौ ऊंच रमिक भन, जहाँ सरल संस्कार दृष्टिगोल
मेम-सिन्धु से धुंसे-नरगण-भिन, सरल सुखायल भर्त्सना गोल ॥

[६१९]

अलक म जगल बलक ह, लभन मेह गंभीर
कीको परै न शर कहे हैमनी चोख-रँग चौध ॥

बलनहु सुन्दरता नहि छुँडे, सुजलनगक प्रेम गभधार
'अनुप' उदाल न सेरुल कानहु ईगल प्रसीतक देनसे चोर ॥

[६२०]

समरति केस, छेय मग मगल, हुहुन एक भर्त्सना,
बिनाय लख छव, मोषवट, मरन विमनकी शक्ति ॥

हूँस सज्जन नर, बिनाय धावि हो—नरम, हुहुक अर्धि एके शर्त्तन,
'अनुप' पाँच धन सेउ नैच, हुच, मरम हँछ मेने धन-शर्त्तन

[६२१]

नम बिसरिसे नोख को हुचन हुसल सुमन
'अर्ध' परि पानन हो, कोरे-कोरे लज्जा ॥

हसल सभाषक कुर्तकके लखि, मस हँसल, नहि कर बिसरल
'अनुप' धाव अनुप कौटुक-सम दीर ल'ग कर प्राणक नाश ॥

[६२२]

नसी हसल कुपकके, तेनी सुमति जोर
दल कल अर्ध-चर्यो अल, लो-चर्यो दोल कलोर ॥

'अनुप' कुपकके अल कलक बह, यहे कलशवा लकल ललक
नो नो कुच चहुँछ नो-चर्यो हो, अति कलार, नहि ललक एक ॥

[६२३]

नीच हिय हुलसे रहे गये मेरका धन
अर्ध-चर्यो मारे मारिसे, लो-चर्यो अके होलन

मेर-धवभाव एकहि प्रमुदिन दह, 'अनुप' नीच नर-हृष्य ललन,
नो-चर्यो मारि माधम मार, नो-चर्यो होलल ऊंच अपार ॥

[६२४]

कलहु छोरे मगलसे, सरल धनके काम,
कलहु मगलसे, नहि कलसे हो, कलहु ललके धान

छोट मनुजलो, नहि कलसे हो, दीध नरक लल एक धान
कलहु छोटल काय सके कर, कलहु 'काचक' लै धनक काम ॥

संविदो न विद्वानां

20

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

योनिं भुजं चक्षुषक श्रोत्रं श्रुतं नृणाम् न सत्यं च
 भ्रमकं कललं नैवेद्यं भुजोर्वो, सौमिकं गच्छता गच्छन् न ह्येव ॥

[illegible]

‘भुत्ति-भुत्ति’ सप्त कांत के ‘शुद्ध’ रानी न युग
 ‘हर्ष’ के ‘हर्ष’ सप्त-भुत्ति, ‘हर्ष’-भुत्ति न युग

गुणार्थं गुणोऽसंगतक कदाचिद्गुणोऽभ्युपगमः ।
 भुक्तमस्तु कर्तव्योऽभ्युपगमोऽप्युपनिषत् ॥




















नमो भगवते वासुदेवाय ।
कथं हि नृणां कलहः प्रलयनाशनम् ।

भक्तु नरसिं ह्रीं सिद्धिनाद सोम कोल आरसो वेल पुलाय
ईश्वर न्यूर दिव कललि हसिमाणी हंसोछ मन्त्रक मने ललि. ह्रीं न्य ॥

27

नामार्णव इत्यर्थः न पावत्यु, एवं कुपार्णिके अन्वय
एवम् नैविक कथ्यते, त्विना न द्वौव एवाव ॥

गङ्गा रक्षैः अ कुमरिन्-चक्रमे सलसङ्गरिपयुं कुमरिनि न अय
रायुं मिताय कपूरदूमे पर द्विपु सुगन्ध अयुं नय गाय

—

—

—

वर-विष-शेष पुराण वर्तते, तस्मै प्राणक दुःखदर्शन
कस्य चरि तावती भिन्न ह, त्वैह आर्द्र मुलकादि

सुविधा निवर्तन काल परीक्षां अनुषंग विधुति से लल लुग-गौर
गौरा-परिचय सूत्रपर आधारित निरुक्ति रीति रं दोर ॥

पुस्तिका में निम्नलिखित

【附註】

मरी	हंसन	अरु	तारी	है	जागरूकी	नीच
गयो	धर	गुनको	मोदी	बसो	दीवाने	साँव

[illegible]

Figure 1

ललाट-स्फोटं विन्दन्मूर्ध्नि त्वं हस्ते विहितं-विहितं त्रिभिः अवधारय ।
 सर्वं विहितं-अन्य-सौभाग्यं वाचा विधाया कृतास ॥

अथ सप्त ऋषयः पुनिपुनि, पुनिपुनि तैल वायं निरुत्तमः ।
तैल निरुत्तमः कौत्तमः उरुत्तमः-उरुत्तमः कोत्तमः तैल कयात्तमः ।

9

ब्रह्मचर्यं अहं भस्म-जीरकम्, पशुं हृदि कटिं शशम् ।
नेत्रां नीचोऽहं च कर्णौ तैर्लोकेन्द्रयोश्च श्रोत्रम् ॥

पण्डित तत्कालीन महामहोपाध्याय श्री जगन्नाथ शर्मा, पण्डित शिवदास उपाध्याय ।

3

[illegible]

भक्ति-चरुति धन-लाभ बल्लभाभिः, भूय धन-कामस्य "धन्य" इति आद्यः ।
यः जलं वायुं च मन-सिनाम धुनं न^त हृदयं, यः चायं कुम्भिलस्य H

[१४४]

—

तौ जाह्नुं सठक क. घट्टे मैलो होय न भिन्न ।
तत्तद्दामस व छुवाये, तद्द जोकने भिन्न न

॥ वा नो न हि भवेत्सकृत् । ॥ भुवः सन्नित्तमममो न हि निव ।
 ॥ वा नित्तमे सन भूतसः ॥ सन सन्नित्तम न भवत् अर्थात् निव ॥

[६५५]

✓ फिर फिर तो वे कलम, चाँई से कीसि बहुर
आ' बलि ! रही गुलाबकी, आग, कीलीकी शर ॥

हलने फलत सुगत ओ नहि फल, 'धनुष' धनार मिल ओ कीसि ।
अमर गुल'धक पद र'दल अहि, नहि स-क'टि आय विपरीति ॥

[६५६]

✓ दोह आग अदसो रहे अलि गुलाब' मर
हीरे बहुरि धनल-आल, धन नरन वे फल ॥

बली आगसो अलि अदकल अलि, 'धनुष' गुल'धक नहि ओ
पुनि धनलने ओ' नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि ॥

[६५७]

✓ सरस अलि नहि नहि अलि, न अलि अलि अलि अलि
गुलल अलि 'धनुष' अलि अलि अलि अलि अलि अलि ॥

सरस सुनमग अलि अलि अलि 'धनुष' न अलि, अलि अलि अलि
नहि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि ॥

[६५८]

✓ कलि नहि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि
अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि ॥

निज बहुरि अलि 'धनुष' अलि, अलि अलि अलि अलि
अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि ॥

[६५९]

✓ अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि
अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि ॥

अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि
अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि ॥

[६६०]

✓ आ अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि
अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि ॥

अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि
अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि ॥

[६६१]

अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि
अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि ॥

अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि
अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि ॥

[६६२]

अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि
अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि ॥

अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि
अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि ॥

[६६३]

अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि
अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि ॥

अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि
अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि ॥

[६६४]

अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि
अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि ॥

अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि
अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि अलि ॥

25

पद गीत सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः
सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः

३
 पूर्णोऽयं नमः श्रीगणेशाय कर्तुं शक्तिं
 त्वत्कृपायाः कृपायाः कृपायाः कृपायाः

[illegible]

पञ्च पञ्चो नामि पञ्च तू पञ्चोक्षि न सोरि

अथ सुकर्म न हि असा रण्यं विष्क. इत्यहं अमुन विमर्शिनः नरकं
अथ सुकर्म न हि असा रण्यं विष्क. इत्यहं अमुन विमर्शिनः नरकं

[illegible]

८
 दिवस पूरा आकर कार्य हो जाय
 तो हो काम व्यापक हो हो जा
 लगेगा

तस्य किं आदर इति च
 आदरं न ह्यपि आदरं न

17
18
19

महेश व्यास विवर्द्धा परा. सुभा द्विपत्रक भा
काष्ठि न ई वर्षव्यवर्द्धा, वास्तव्य योको नर

१५५६ ई. के. ए. में विजय में पं. "राजपूत" "पुनः" पुनः
 १५५६ ई. में विजय में पं. "राजपूत" "पुनः" पुनः

100

नाम धर्मोक्त इ नाम अक्षराणि न काम
नाम निगम इति फलं अक स्मृत्यो ह्येव

सकता है। हमारे अपने गार
मार्गों का जो आनंद प्रदान
करे, वह हमारे जीवन का
सर्वोत्तम अंग है।

7
6
5

महि पावलि, खुम्/मा अह, खुतु ललमा । महि भुल
अपल भय विग पाहुँ अय । भय कल, कल, खुल ।

गन्तुं न पावस शिक प्रसन्नः प्रथं 'सुनद नहि ईद विस्मर्ति' ।
 शब्द 'गोन' 'वृष' 'उत्तमङ्गनी', सप्त फल, फल पाल ओ 'हार्' ॥

6

योनिममता सां तदसां नमसां आभ
 योनिममता सां तदसां नमसां आभ

संज्ञा र्णां यर्वि कपूर्वके, संज्ञा जर्णि भ्युप सृजि हंस
नारत्ता, सुगन्ध-मार्णिमा नर्वि घट्ट, मरुयो किङ्क कम्र खैल

64

धर्म न भक्ता राम-राज्य संन भक्त्य संन्यास
 तस्मिन्-संन्यासे-संन्यास्ये वेदे भक्त ०१६ संन्या

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

43

[illegible][illegible]

2007

वा नर नरि मन्त्रिणा मन्त्रि लोकेभ्यः राजानां च
राजानां चक्रवर्ति श्रीपालो मन्त्रि चक्रवर्ति मन्त्रि

श्री-सूरदासजी जकारा श्रीगुरुदेवी पृथ्वी शिव-महाराज
 श्री-महाराज श्री सुकुट पानेहि वन साधन साधु का पूजन-वमन

[६७५]

अने बाहु, धाँ को कलह हाथिप को धामधर !
नहि जानल बाहु धामधर ओही, ओह, धामधर !

'धनुष' जाल बाहु के करैस अहि, एके कलह हाथिक धामधर
नहि जानल एहि धुल्ले बलहक, धामधर, धुल्लेक धामधर वेन्तर ॥

[६७६]

करि कुललको आवमान, सोही वल्ल लताहि
र गोपी ! सति-वंचक, आन मित्रावत ताहि ?

'धनुष' कुल्लेक-कुल्लेक करि जे 'मोहि' धामधर करि सहास
अर सुने मान्यो । सो ओकरनि, धनर देहीवह ? ता भिन्न लाल

[६७७]

प्रमम धुवाँसको सुवा, बिवा सलोतल ओहिय ।
आनल अवाह आग्य लल, आगी धुव लयोध ॥

जेठ 'धनुष' नैयक 'धनुष'लोर, भाँक नारगुल राखल धाम
'धनुष' इधर धिक नारल-इधर अमिल आग्य पेशिय महान ॥

[६७८]

'धनुष' सुल-लल्लरि-धरी—अर ओर-हीर बिज लाल
धनुष-धनुष धरिहहि अमो, नल्लरके पुन मान ॥

'धनुष' नार-सुल-लाल 'धनुष' पल्लकल्लर' इ लुकि हलि-लुमिरण 'लाल
अ'धनुष लुमिर बिधस-नार-धाम निज प्रमि अर नल्लरि-गुण गार ॥

[६७९]

कलल लालयो नेहि सल्ल, सो करि जाना नहि ॥
नार ओहिल लल धरिहहि ओह न देहो जहि

'धनुष' नललल ओ अमल लाल जेसल्लर सहि सो को हलि हास
जेसल लाल जहि लुगली लल, धुल्ल न पल, लाल लो लुग आन ॥

[६८०]

X जल, जाना लाल, लाल, सो न पल्लो लाल ।
मन ओहो, नारी धाम, सोही सहि राम ॥

'धनुष' लालक जल माल लाललो, सो लाल लिल न पको काम
मन पल्ल कोले नौल लल्लर धिक, होहि' सुनिन लाल्लिनी' नाल ॥

[६८१]

अर जल कोलो लल्ल-ल, धी सल्लको लल्ल-ल
प्रतिधिल लल्लो जहो, एके लल ललल ॥

धम 'धनुष' लल्ल लल्ल' इ जालल, धनुष कोल जल काल लल न
देहो, जहो लल्ल प्रतिधिलल, एके लल ललल, लललल ॥

[६८२]

धुल्ल-लल्लल, ललल-लल्ल, लल्ल कोलि ललल ॥
लल्ल ललि लललल, ललल ललो अहि जल ॥

'धनुष' लल्ल ललि, इधर-ललि अलि ललल, ललोल ललल न लल
धुल्ल लल्लल, लुलि-लललल, ललल-ललल, 'लल्ल ललल ललल ॥

[६८३]

नौ लाल को लल-लललल ललि आल लल्ल लल
ललल लल लो-लो ललि, लल्ल न लल ललल ॥

ललल ललि लल लललल 'धनुष' अलल काल धल्लो ललल
ललल ललल ललल लललल, ललल लल्लो न लो लल ललल ॥

[६८४]

X लल लल-ललललल, लल्ल लल ललल लल ?
लललल लल-ललल लो लो ललो ललल ॥

'धनुष' ललि ललल ललल लो ललल लल ललल लल लल
ललि ललि ललल ललल लो ललल लल लल ललल ललल ॥

[७१०]

अन्ध-भयने मत छोड़े, यदि मयाका सोर
जग-द्वारो लपटो सेहवो पूर्वो जन्मकिमोर

कोनहुदिखि सवकं सेवक अछि, एक माय भिन्नदर्शिकमोर
निज, निज बातक हेतु क्यो लव 'अनुप' विषाद करिषी की जार ॥

[७११]

अन सरोवर कर चरण, छा-खज, सुख-धर ।
भयस साव क्यारि सार, काहि न करति भयद ?

'अनुप' पैर, कर छास कमल लस, हेतु क्यज सुख चर सप्तान
साहि समवर मास-सुन्दर, कर प्रकटा नहि मुनिन मान ॥

[७१२]

धोरे धरे न हूँ सके, कहि सगरोई हैं धेन
रोरस होहि न नेकहुँ, काहि निहार दीन ॥

'अनुप' छोड़ नर पैर भ से सभ चरल-चरल कहि क्यारो वर
अखि सुन्दर-मुन्दरि देखनहुँ, रस न पैर में नर्क नैन ॥

[७१३]

औरे भक्ति, औरे जपन, भयो जपन-रोन और ।
नौसक में निज चित कही कहैं चहुँई नैन ॥

जाहि, वचन, सुख रहै 'अनुप' अछि, आसि नारदक नैमूर बाल
हुँ-एक दिन पति-चित-सकल, सखल भीरु कहैं नुब 'दल' शाल ॥

[७१४]

हाँ गहै क्योनि भक्ति को निज-पुन कइयाय ?
जकसीई ही को हरे, वी सभे उकसाय ॥

कईक, हाँ, नून कुछ पिय-दिय एस साहि देखि के नस पिय दीय
'अनुप' देख उलकाय समधिक उठल छा-निजे सवि सवरीय ॥

[७१५]

गुरुवर देने स्वद को, निज दर्शन देनाय ।
पनिजो पति राखनि बसु आशुन धोक कसाय ॥

दोसर परिणय छिन नायकपर, निज उरि मुखजन कोय काहु
अपनहि भंड धैक बनि वाजा गसिक निनिचट प्रदुप नसेछु ॥

[७१६]

धर-धर भक्तनि, दुष्टकिमो, न अखीस न्यारि
पतिव राखि चार घुरी न राखी जवमर्द

वर-वर किन्दुकि-नुरकनि दं अछि, 'अनुप' अशोक भाग्य 'वैशेष
नयक राखि पति सुन्दर-जुद्धर राखल उरि जयसिध नरेश

[७१७]

जल अर्थ पानेव विमल ओ नन आयु अगम
देन पति हे भगवान् आनो न मुन-सार ॥

ननम कर्तव्यपर, कानि नकल अछि, जागि दगरे भद्र क अगम
नरद पइल नरद-नियर गुण गुन 'अनुप' बखिब नहि, सुक-द्वार

[७१८]

(पाठ ' पाप कहेन न पौर, अपका क्यो को मोह नक ?
रस अग न पौर, एक मोहन-लस छकल ।

अछि 'पाप' कहेन पौर को, कोन ५५ कनि लहि अकल भागि
नयन ननम दिखल पति नैन, 'अनुप' लके पति धैरज जागि

[७१९]

क्योन दुपहर नेक धोक छरे नल मोहि
सहेर पाप सरोर हु, भाक कइल पयोधि

नेह दुपहरक दृष्टि सखल यल-भाकल 'अनुप' मोरके संगि
गने नरद सन भक्त-भूमि, कह सभ-वासी लागि पयोधि ॥

शुद्धाशुद्धि-पत्र

आदेशः ।

किञ्च पुनः-संशोधने, तथा कंठस्थानक असाधयन्त एवम् अविश्वस्त
मैत्रीनपर उपशास समग्र दर्शय जस्यैव एवम् दुर्दिने ज्ञेयम् कामये परै
पुस्तकम् किञ्च अथैक अशुद्ध रूढि मैत्रीनपरि अनपेक्ष प्रार्थना
ने अपने लोकनि पुस्तक पदवासी पूर्व उपवा निम्न-लिखित
शुद्धाशुद्धि क अशुद्धाद संशोधन करवाक अवश्य कष्ट कैल जाय
एव-स्वीकृता

भाषाः अशुद्ध

शुद्ध

प्रसक्त-कामना

मैथिली

भरती

भारती

४

॥

तप्य

तर्प्य

५६

हिन्दी

गोपाल

गोपाल

६६

"

लक्ष्मण

लक्ष्मण

७०

मैथिली

बन्धुका

बन्धिका

७०

"

औदृष्ट

औदृष्टादत

७४

"

अंग-कान्ति

अंगकान्ति

७८

"

मालिन

मालिन

८४

"

अम

अम

८४

"

विचार

विचार

८४

"

नगर

नगर

८४

"

सादसक

सादसक

८४

"

वर्धितले

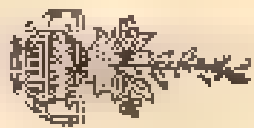
वर्धितले ।

८४

"

कलक

कलक



पद्य—संख्या	भाषा	अशुद्ध	शुद्ध
६६	मैथिली	खीभ	खीरक
६५	"	तुष्टक	तुष्टक
६६	हिन्दी	सतल	सतल
७४	मैथिली	सञ्जसदा	सञ्जसदा
७४	"	निय	निय
८१	हिन्दी	और	और
८६	"	दयक	दयक
१०१	मैथिली	षकार	षकार
११८	हिन्दी	होनि	होनि
११८	"	निद	निद
११८	मैथिली	करावो	करावो
११८	"	समदमे	समदमे
११८	"	कलित	कलित
११८	"	नजछ	नजछ
११८	"	बछ	बछ
११८	"	चित्रक	चित्रक
११८	हिन्दी	ह	ह
११८	मैथिली	मुलक	मुलक
११८	"	मन हा	मन हा
११८	हिन्दी	बुद्ध	बुद्ध
११८	"	नीयम	नीयम
११८	"	जग	जग
११८	मैथिली	गुरुद्वय	गुरुद्वय
११८	हिन्दी	वह	वह
११८	मैथिली	कलह	कलह

पद्य—संख्या	भाषा	अशुद्ध	शुद्ध
११८	मैथिली	द्वय	द्वय
११८	"	म	म
११८	हिन्दी	साहा	साहा
११८	"	मे ले	मे ले
११८	मैथिली	विद्या	विद्या
११८	हिन्दी	वसले हा	वसले हा
११८	"	वर्षा	वर्षा
११८	मैथिली	साहा	साहा
११८	"	सयल	सयल
११८	मैथिली	चूण	चूण
११८	"	पनाक	पनाक
११८	हिन्दी	सौन	सौन
११८	"	निष्ठाविद्या	निष्ठाविद्या
११८	मैथिली	साहि	साहि
११८	"	हरति	हरति
११८	"	ज्यालासो	ज्यालासो
११८	"	मुल	मुल
११८	हिन्दी	गालाभय	गालाभय
११८	"	गाहा	गाहा
११८	मैथिली	'पुष्पा'	'पुष्पा'
११८	"	नाहि	नाहि
११८	"	मयना	मयना
११८	"	नारो	नारो
११८	"	काध	काध
११८	"	काधक	काधक

पद्य-संख्या	भाषा	अशुद्ध	शुद्ध
२८८	हिन्दी	कर-कर	कारि-कारि
२८९	मैथिली	ता	तौ
"	"	अब	अबू
२९१	हिन्दी	ठाढ़	ठाढ़ी
"	मैथिली	आ छथि	ओ छथि
२९२	हिन्दी	जाइ	जो
२९३	"	तोहमे	तोहीमे
२९४	मैथिली	शेभ	शोभा
२९५	"	परास	परासे
२९६	"	प्रभ	शेभ
२९७	"	बिलास	बिलास
२९८	"	होय !	दाण !
२९९	हिन्दी	सूयट	सुंयट
३००	मैथिली	रएक	रञ्ज
"	"	बहलाय	बबराय
३०१	"	बन	बर्ग
३०२	"	प्रलम	पूजिम
३०३	"	व पीठ	दे पीठ
३०४	"	रञ्ज	रञ्ज
३०५	"	बिरहमे	बिरहमे
३०६	हिन्दी	और	और
३०७	मैथिली	भयनक	अचनक
३०८	"	अल	भेल
३०९	हिन्दी	कहे न	करे

पद्य-संख्या	भाषा	अशुद्ध	शुद्ध
३१०	मैथिली	सुवादयक	सुवायक
३११	"	किस	किस
३१२	हिन्दी	रग	रंग
३१३	मैथिली	पदोषा	पदोषा
३१४	हिन्दी	रा	रंग
३१५	मैथिली	बन	बैन
३१६	"	चराचर	चिराचर
३१७	"	रौ	रौ
३१८	"	हय !	देव !
३१९	"	पहेछ	पहेछ
३२०	"	सङ्गोल	सङ्गोल
३२१	हिन्दी	गोउर	गोउर
३२२	"	टिकु	टिकु
३२३	"	रधी	देधी
३२४	मैथिली	बैन	बैन
३२५	"	अधारा	अधारा
३२६	मैथिली	झर	ईछ
३२७	"	अएट	छपड़े
३२८	"	चर	अरु
३२९	"	नारसी	नोरसी
३३०	हिन्दी	कुल मत	कुल मत
३३१	मैथिली	अलिनद	आनद
३३२	"	अ	ओ
३३३	"	मुडा	मुठी
३३४	हिन्दी	ह	ह

शैथिली-सन्निवेश'क निरूपणशैली

अद्वैत सत्जन-समुदाय !

शास्त्रनिक सुश्रुत एवम् पुत्रधर्मस्थान प्रकाशन-प्रणालीक अनुकूल शैथिली-साहित्य-प्रकाशित करावक एवम् पत्र-पत्र, प्रकाशित शैथिली-ग्रन्थ सञ्चर्क एकत्र के चित्तरूप करावक 'मिथिलानि' कोनों स्वनन्त, सुग्री-गहित एवम् व्यापक शैथिली-साहित्य-मार्गस्थक ज्ञानवा अभावको शैथिलीक सर्वार्थीय उत्तमिर्मे प्रयत्न वाचक प्रमाणित भं महत्त अस्ति । ताहो अभावके पूर्ण करावक अत्रिल्ल अशिल्लागर्वी एवम् शैथिली-रचना करावक चित्तसंचित मार्गक पवित्र भोजनान्वी भेदित मे कम सञ्चय एहि 'शैथिली-मन्त्रिक' मयापना करावक पुनराहस्य-मान केले लाछि । अतएव सम्पूर्ण मिथिली-निघाती सञ्चय-समुदायको करतल पार्थना अस्ति ओ अपने लोकनि शैथिली-अशानि-अन्त आननाको भेदित मे एहि नवजात 'शैथिली-मन्त्रिक' क सस्य प्रकारे पूर्ण सभयता के 'मन्त्रिक' के सुदृढ, सुव्यवस्थित एवम् पूर्ण प्रभावशाली सेवा अर्थाक कृपा अवश्य परेन हमरा चिरअपगत कलनाय ।

नियम—

(१)—जे महापुरुषाव ॥१॥ आना प्रवेश-शुद्ध देनाह ओ 'शैथिली-मन्त्रिक' क सेवायो आहक मानल जावह ।

(२)—सथायी आहकसी पुस्तकक ललुआ श नहि लेब जेमनि । किन्तु बाहि 'द्विजनों' सथायी आहक देनाह ताहि 'द्विजनों' अतका पुस्तक पवित्र-स्वारा प्रकाशित होयत ओ सस्य पुरुषक दुष्कर लेबाक कृपा एवम् कष्ट अवश्य करक पड़तनि । पूछे-प्रकाशित पुस्तक सच लेब अवधा नहि लेब हुनका कृपापर निर्भर रहयनि । यदि केलाह तो पुस्तकक पूर्ण सूल्य क्षमक पड़यनि ।

पदम्—संख्या	भाषा	अशुद्ध	शुद्ध
५६८	शैथिली	अनभवा	अनभवा
५७०	किन्ही	हुनास	हुनास
५७६	शैथिली	पारवस	पारवस
५८७	"	व्याम	व्याम
५८९	"	नयोडा	नयोडा
५९३	किन्ही	एजरा	एजरा
५९५	"	सजलस	सजलस
६०५	शैथिली	कासहु	कोनहु
६०८	"	उसारा	उसारा
६१०	"	अ	अ
६१२	"	सरा	सरा
६१७	"	जेम	जेम
६१९	किन्ही	पयो	पयो
६२२	शैथिली	विमरस	विमरस
६२७	"	गुणा	गुणा
६२८	"	अ	अ
६२९	शैथिली	अवके	अवके
६३१	"	अष्ट	अष्ट
६३३	"	केलहु	केलहु
६३४	"	उपानिक	उपानिक
६३७	"	से	से
६४३	"	लक	लक
६४८	"	नोह	नोह
६५१	"	दर	दर

(३)—स्वामी-आह-कर्म-पुस्तक श्री० पी० पी० कायासी १५ दिन पूर्व पत्र-द्वारा चार्ज है देल जेतनि । पी० पी० पी० श्री देले हुनक नाम

स्वामी आह-कर्म नामाचलीसी श्रुतय देल जेतनि ।

(४)—स्वामी-आह-कर्म-शुद्ध कोनो अपन्यामे हुनक नहि आ

सकैल ।

(५)—स्वामी-आह-कर्म प्रति कयेवा चार्ज आना लाग अपन श्रीम-

आह-कर्म चार्जक नाम अपनय पदेवाक कृपा करथि ।

(६)—स्वामी एवम् स्वामी-आह-कर्म श्री० पी० पी० पथम् धर्मिक-

सत्ते देमक पदसनि ।

७) —यदि 'मन्दिर'क कार्य-स्वामी-श्रुतक, हुन प्रकारक आह-कर्म लोकनिक सेवामे पठावल जेतनि नौ श्री० पी० पी० क चार्जक

आप कर्त्त हुनका लोकनिक देमक पदसनि ।

(८)—देमयो मैथिली-साहित्य-भक्त-श्रीमन्मन्मन्-संज्ञन-समुदाय

'मन्दिर' के एकवेर पीस सौ थाका प्रदान करवाक कृपा करताह श्री

'मन्दिर' क सर्वश्रेष्ठ, एक सौ थाका प्रदान करताह श्री पुण्ड-योगक, श्री

पुनीव थाका प्रदान करताह श्री स्वाहायक मानल जेतनि । हुनका

लोकनिक चित्र, परिषद एवम् नाम श्रुतयि सेहो 'मन्दिर'-दाय

प्रकाशित हुनक लघुमे सुविधातुसार अपनय प्रकाशित कैल जेतनि ।

(९)—जे कये संज्ञन मैथिली-पुस्तक प्रकाशन एवम् छपाख

पुस्तकके विक्रय करवाक चाहथि, अपनो जितना श्री कोनो विशेष-

विषय नुनकाक होसन, प्रच-अपनय करथि ।

'मैथिली-मन्दिर'

हुनका

सुलभापनाक, भगवन्पुर ।

विनोद-

श्रीधनुषधारी दास,

आह-कर्म ।

प्रत्येक मैथिली-भाषा-भाषी लोकनिक

प्रधान कर्त्तव्य थीक जे

मैथिली में बिहारी

क

एक-एक श्रुति

अकल्प करवाक कृपा करी !

—धनुषधारी दास